सभी बच्चे एक साथ हँस पड़े। अध्यापिका ने कहा - ''ओ शरारती! वहाँ इस तरह की फिल्में नहीं होतीं। वहाँ 40-50 मिनट की ज्ञानवर्धक फिल्में जैसे, ब्रह्माण्ड, नील नदी का रहस्य आदि दिखाई जाती हैं।''

और टीचर जी! लेज़र शो में क्या है?'' रश्मि ने उत्सुकतावश पूछा।

'बच्चो-इसमें लेज़र को मनोरंजन के लिए प्रयोग किया जाता है। इसमें म्यूज़िक और लेज़र के तालमेल के साथ दर्शकों का मनोरंजन होता है। यहाँ 3डी में एक खास तरह का चश्मा पहनकर शो देखा जाता है। जिससे कि दूर स्क्रीन पर दिखाए जा रहे चित्र आपके बिल्कुल सामने लगते हैं। यह बहुत ही मनोरंजक होता है।''

'मैम-कुलविन्द्र ने जो फ्लाईट की बात कही थी वह क्या है?' कुलजीत ने पूछा।

'बच्चो! उसे फ्लाईट सिमुलेटर कहते हैं दरअसल इसमें एक हवाई जहाज़ जैसे आकार का मॉडल है जिसमें दर्शक बैठते हैं। वहाँ वीडियो के माध्यम से स्क्रीन पर हवाई उड़ान दिखाई जाती है। इधर हवाई जहाज़ जैसे मॉडल के नीचे लिफ्ट जैसी कोई मशीन होती है जो उसे दाएँ-बाएँ, ऊपर नीचे करती है। इस तरह दर्शकों को ऐसे लगता है जैसे वायुयान ही उड़ान भर रहे हों। यह बहुत ही मनोरंजक व रोमांचक लगता है,'' अध्यापिका ने बताया।

''अच्छा अध्यापिका जी - डिफैंस गैलरी में क्या है- वहाँ तो टैंक तोपें होंगी? रश्मि जो बहुत देर से चुप थी, बोली।

''हाँ रश्मि! डिफैंस गैलरी में हमारी रक्षा करने वाले और दुश्मन को नाकों चने चबाने वाले टैंक हैं। जैसे विजयन्त टैंक जिसने 1965 की लड़ाई में अमेरिकी टैंकों को करारा जवाब दिया था और एयर क्राफ्ट मिग-23 जिसने कारगिल की लड़ाई में दुश्मन के छक्के छुड़ाए थे।' अध्यापिका ने भावुक होते कहा।

अध्यापिका ने देखा - बच्चे साइंस सिटी में पूरी तरह खो चुके थे। बच्चो ! साइंस सिटी में और भी बहुत कुछ है।

'मैम- हमें साइंस सिटी दिखा दो न'

'हाँ-हाँ! मैम- हमें ज़रूर दिखाओ।'

बहुत-से बच्चे अनुरोध कर रहे थे।

''हाँ, बच्चो! ठीक है! मैं प्राचार्य जी से इसके बारे में बात करूँगी। अगर उन्होंने अनुमति दी तो हम साइंस सिटी कपूरथला देखने जायेंगे।''

बच्चों के चेहरे गद्‌गद्‌ हो गए।

तभी अगले पीरियड की घण्टी बजी। अध्यापिका स्टाफ रूम की ओर चल पड़ी।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਛੁੱਟੀਆਂ	=	छुट्टियाँ	ਚਹੇਤੀ	=	चहेती
ਅਧਿਆਪਕਾ	=	अध्यापिका	ਸਾਇੰਸ ਸਿਟੀ	=	साइंस सिटी
ਡਰਾਵਣਾ	=	डरावना	ਪ੍ਰਤੀਯੋਗਿਤਾ	=	प्रतियोगिता

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-

ਜਮਾਤ	=	कक्षा	ਮੇਲ ਜੋਲ	=	तालमेल
ਫਿਲਮ	=	पिक्चर	ਐਨਕ	=	चश्मा
ਆਗਿਆ	=	अनुमति			

3. शब्दार्थ :-

अभिवादन	=	सम्मान करना
शिलान्यास	=	नींव पत्थर रखना
प्राचार्य	=	स्कूल का मुखिया
वरिष्ठ	=	पद या क्रम में बड़ा

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) साइंस सिटी का पूरा नाम क्या है ? यह किसके नाम पर रखा गया है ?
(ख) इसका उद्घाटन कब हुआ ? और किसने किया ?
(ग) दिल के मॉडल में क्या दिखाया गया है ?
(घ) डायनासोर पार्क में कितनी तरह के डायनासोर हैं ?
(ङ) वोल्केनो आकृति की क्या विशेषता है ?
(च) डोम थियेटर की क्या विशेषता है ?
(छ) फ्लाइट सिमुलेटर में क्या दिखाया गया है ?
(ज) विजयन्त टैंक और एयर क्राफ्ट मिग 23 कहाँ पर हैं ?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच पंक्तियों में लिखें :-

(क) साइंस सिटी में आपको देखने में जो सबसे अच्छा लगा, उसके बारे में लिखें।
(ख) साइंस सिटी में ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है, स्पष्ट करें।

6. शब्दों से नये शब्द बनायें :-

फैला = फैलाव
भाव = ________

बोझ = ________
डर = ________
रोमांच = ________
मनोरंजन = ________
असल = ________
आनन्द = ________

7. **लिंग बदलें :-**

छात्र	= छात्रा	अध्यापक	= अध्यापिका
शिष्य	= ________	नायक	= ________
सुत	= ________	सेवक	= ________
प्रिय	= ________	गायक	= ________
		लेखक	= ________

8. **शुद्ध करके लिखें :-**

छुटियाँ	= ________	अभीवादन	= ________
खेलकुद	= ________	अधियापिका	= ________
परणाली	= ________	परदर्शनी	= ________
थीयेटर	= ________	कारयालय	= ________
पराचारय	= ________	ब्रहमंड	= ________
द्रशक	= ________	अनुरोद	= ________
म्यूजिक	= ________	ज्ञानवरधक	= ________
दरासल	= ________	आपरेशन	= ________

9. **उचित योजक शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरें :-**

(क) _____उन्होंने अनुमति दी _____ हम साइंस सिटी देखने कपूरथला जायेंगे।
(यद्यपि......तथापि, यदि......तो)

(ख) ऐसा लगता है_____ सब कुछ आपके पास हो रहा है। (ताकि, मानो)

(ग) इनके मुँह में हाथ मत डालना _____ दुर्घटना हो सकती है। (नहीं तो, यानि)

(घ) यहाँ 3डी में एक खास तरह का चश्मा पहनकर शो देखा जाता है _____दूर स्क्रीन पर दिखाए जा रहे चित्र आपके सामने लगते हैं। (और, जिससे कि)

(ङ) हमने वहाँ बोटिंग की _____ डायनासोर देखे। (या, और)

(च) मैंने वहाँ देखा तो सब कुछ था _____ कुछ याद नहीं आ रहा। (चाहे, परन्तु)

10. इन शब्दों और मुहावरों के अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-

नाकों चने चबाना ______ ______________________

खुशी में गद्‌गद्‌ होना ______ ______________________

करारा जवाब देना ______ ______________________

छक्के छुड़ाना ______ ______________________

11. उचित विराम चिह्न लगायें :-

(क) बच्चो आप सब कैसे हो

(ख) क्या आपको इसका पूरा नाम पता है

(ग) हाँ सावधानी जरूर रखनी होगी

(घ) ओ शरारती वहाँ इस तरह की फिल्में नहीं होतीं

(ङ) दीपशिखा पढ़ाई के साथ साथ संगीत खेलकूद ज्ञान विज्ञान में सब से आगे रहती थी

रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) मौखिक अभिव्यक्ति - आप कभी शैक्षिक भ्रमण पर कहीं गये हों तो अपना अनुभव कक्षा में सुनायें।

(ख) लिखित अभिव्यक्ति - अपने मित्र/सहेली को पत्र द्वारा साइंस सिटी की विशेषतायें बताते हुए उसे देखने के लिए प्रोत्साहित करें।

(ग) रचनात्मक कार्य - साइंस सिटी के चित्र इकट्ठे करें और स्क्रैप बुक में लगायें।

पाठ-13

माँ

ईश्वर का वरदान है माँ
सब रिश्तों में महान है माँ ।
जब जीवन का पाठ पढ़ाती माँ
तब किताब बन जाती माँ ।

कथनी में उसकी शिष्टाचार है
करनी में उसकी संस्कार है ।

जब हर क्षण का अहसास कराती माँ
तब समय बन जाती माँ।

जगने में उसके प्रभात है
सोने में उसके रात है ।

जब हर विपदा को हराती माँ
तब हिमालय बन जाती माँ।

साहस उसका हथियार है
ऊर्जा उसमें अपार है ।

जब ममता का प्रकाश फैलाती माँ
तब बाती बन जाती माँ।

दुख लेना उसको स्वीकार है
सुख देना उसका सदाचार है ।

जब खुशी के आँसू बहाती माँ
तब उत्सव बन जाती माँ ।

दुआओं में उसकी चमत्कार है
प्रोत्साहन में उसके जय-जयकार है ।

जब खुद कम खाकर बच्चों को खिलाती माँ
तब गौरैया बन जाती माँ।

वात्सल्य प्रेम के उसमें भाव हैं
समर्पण उसका स्वभाव है ।
जब आगे बढ़ने का गीत सुनाती माँ
तब नदी बन जाती माँ।
मर्यादित रहना उसका व्यवहार है
सहनशीलता उसका उपहार है।
जब नि:स्वार्थ सेवा भाव जगाती माँ
तब धरती बन जाती माँ
केवल देने में उसका विस्तार है
चरणों में उसके स्वर्गद्वार है।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-**

ਈਸ਼ਵਰ	=	ईश्वर	ਊਰਜਾ	=	ऊर्जा
ਮਾਂ	=	माँ	ਚਮਤਕਾਰ	=	चमत्कार
ਹਥਿਆਰ	=	हथियार	ਨਦੀ	=	नदी

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-**

ਸਮਾਂ	=	समय	ਹੌਂਸਲਾ	=	साहस
ਸਵੇਰ	=	प्रभात	ਬੱਤੀ	=	बाती
ਮੁਸੀਬਤ	=	विपदा	ਸੁਭਾਅ	=	स्वभाव

3. **शब्दार्थ :-**

कथनी	=	कही हुई बात, कथन
शिष्टाचार	=	शिष्टता पूर्ण आचरण एवं व्यवहार
संस्कार	=	व्यवस्थित करना, सजाना
विपदा	=	संकट
बाती	=	दीपक की बत्ती
मर्यादित	=	प्रतिष्ठित

सहनशीलता = सहनशील (सहन करने वाला) होना

नि:स्वार्थ = बिना किसी स्वार्थ के

उत्सव = मंगल कार्य

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) माँ किसका वरदान है ?

(ख) माँ समय के रूप में क्या करती है ?

(ग) हर विपदा को हराने पर माँ को क्या कहा गया है ?

(घ) माँ का हथियार क्या है ?

(ङ) माँ बाती के रूप में क्या करती है ?

(च) खुशी के आँसू बहाने पर माँ को क्या कहा गया है ?

(छ) माँ गौरैया कब बन जाती है ?

(ज) आगे बढ़ने का गीत सुनाने पर माँ को क्या पुकारा गया है ?

(झ) इस कविता में माँ का उपहार क्या बताया गया है ?

(ञ) माँ के चरणों में किसका द्वार है ?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) इस कविता में माँ की कथनी और करनी में किसके दर्शन होते हैं ?

(ख) दुख और सुख में माँ की क्या भूमिका है ?

(ग) माँ की दुआओं और प्रोत्साहन से क्या होता है ?

(घ) धरती के रूप में माँ क्या करती है ?

6. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

ईश्वर = ________, ________

प्रभात = ________, ________

रात = ________, ________

नदी = ________, ________

चरण = ________, ________

धरती = ________, ________

किताब = ________, ________

7. विपरीत शब्द लिखें :-

वरदान = ______

जीवन = ______

स्वीकार = ______

प्रेम = ______

विस्तार = ______

सदाचार = ______

जय = ______

8. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-

जिसका पार न हो ______

किसी का उत्साह बढ़ाना ______

बिना स्वार्थ के ______

माँ का बच्चे के प्रति प्यार ______

अच्छा व्यवहार ______

9. रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** -अपनी माँ पर कविता सुनायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति** -अपनी माता पर चार-पाँच वाक्य या कविता लिखें।

पाठ-14

सहयोग

'सहयोग' शब्द दो शब्दों के योग से बना है : सह और योग। सह का अर्थ है-साथ' योग का अर्थ-मेल' अर्थात किसी कार्य में एक दूसरे का साथ देना, हाथ बँटाना। प्राय : ऐसा सुना जाता है कि कोई भी मानव अपने में पूरा नहीं और यह है भी सच्चाई। किसी में बुद्धि की कमी है, किसी में शारीरिक बल की कमी है, कोई धन के अभाव से दु:खी है। यही नहीं स्वभाव में भी विविधता दिखाई पड़ती है, जिसके कारण अनेक कमियाँ मानव में आ जाती हैं। ऐसी स्थिति में आपसी सहयोग द्वारा हम अपनी कमियों को पूरा कर सकते हैं और उद्देश्य को प्राप्त कर सकते है।

अन्धे और लंगड़े की प्रसिद्ध कहानी सहयोग का अच्छा उदाहरण है। नदी के किनारे एक गाँव था। उसमें एक अन्धा और एक लंगड़ा रहते थे। वर्षा के दिनों में वहाँ बाढ़ का पानी आ गया। लोग गाँव को छोड़ कर भाग गए। अन्धा और लंगड़ा क्या करते? दोनों निराश थे। लंगड़ा चल नहीं सकता था और अन्धा देख नहीं सकता था। लंगड़े को एक उपाय सूझा, उसने अन्धे को कहा, ''तुम मुझे अपने कंधे पर बैठाओ, मैं तुझे रास्ता बताता जाऊँगा, तुम बढ़ते जाना। इस तरह एक दूसरे के सहयोग से हम दोनों सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाएँगे।'' अन्धा सहमत हो गया। दोनों आपसी सहयोग द्वारा गाँव से बाहर आ गए। उनकी जान बच गई।

कई बार अचानक मुसीबत आ घेरती है। अकेला आदमी उसका सामना नहीं कर सकता। सहयोग वह पारस है जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है। उसका मूल्य बढ़ जाता है। एक तिनका कितना कमजोर होता है। पर अनेक तिनके परस्पर सहयोग द्वारा मजबूत रस्से का रूप धारण करते हैं, जिससे मदमस्त हाथी भी बाँधा जा सकता है।

सहयोग से सम्बन्धित एक कथा हितोपदेश में आती है। कपोतराज चित्रग्रीव कबूतरों के साथ आकाश में उड़ा जा रहा था। जंगल में बिखरे हुए चावल-कणों को देखकर कबूतर नीचे उतर आए और शिकारी के जाल में फँस गए। उन पर मुसीबत आ पड़ी। मौत दिखाई देने लगी। कपोतराज चित्रग्रीव ने उन्हें धैर्य बंधवाया। उन्हें साहस से इकट्‌ठा मिलकर उड़ने को कहा। उन्होंने परस्पर सहयोग किया। वे जाल को उड़ा कर ले गए और दूर निकल गए। शिकारी हक्का-बक्का रह गया।

सहयोग एक प्राकृतिक नियम है, यह कोई बाहरी या बनावटी तत्त्व नहीं है। प्रत्येक प्रदार्थ और प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्येक काम आन्तरिक सहयोग पर अवलम्बित है। किसी भी मशीन को लें उसके पुर्ज़ों और मशीन में अंगांगी भाव का सम्बन्ध है। यदि उसका एक पुर्ज़ा भी खराब हो जाए तो वह मशीन चल नहीं सकती। हम अपने शरीर को ही लें। आँख, कान, हाथ, पाँव आदि इसके विभिन्न अंग हैं, शरीर अँगी है वे परस्पर सहयोग द्वारा शरीर का धारण और पोषण करते हैं। किसी अंग पर चोट आती है तो मन एकदम वहाँ पहुँच जाता है। पहले क्षण आँख वहाँ देखती है और दूसरे क्षण हाथ सहायता के लिए वहाँ पहुँच जाता है। इसी तरह समाज और व्यक्ति का सम्बन्ध है। समाज शरीर है तो व्यक्ति उसका अंग है। जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अंग परस्पर सहयोग करते हैं, उसी तरह समाज के विकास के लिए व्यक्तियों का आपसी सहयोग अनिवार्य है। शरीर की पूर्णता अंगों के सहयोग से मिलती है, समाज की पूर्णता व्यक्तियों के सहयोग से मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति जो जहाँ पर भी है, अपना काम ईमानदारी और लगन से करता रहे तो समाज फलता-फूलता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के अभाव में वह निरा पशु ही रहता है। समाज जड़ पदार्थों का समूह नहीं है, वह नर-नारियों के परस्पर सहयोग और प्रेम से बनता है। उसी से मानवता विकसित हुई है। आज भी यदि हम किसी शिशु को समाज से पृथक् कर दें, उसे किसी जंगल में छोड़ दें तो आप जानते हैं कि क्या होगा? वह निरा पशु ही रहेगा। वह हमारी तरह बोल नहीं सकेगा। उसका मानसिक और बौद्‌धिक विकास नहीं होगा। भाषा और साहित्य, संस्कृति और सभ्यता, ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में मानव ने जो प्रगति की है वह किसी एक व्यक्ति की देन नहीं, बल्कि अनेक नर-नारियों के सतत सहयोग का परिणाम है।

आप भी समाज के अंग हैं। इसका पहला स्तर परिवार है। परिवार अंगी है, माता-पिता, भाई-बहन उसके अंग हैं। सब अपना-अपना काम अच्छी तरह करते हैं। माता घर का काम-काज करती है, बच्चे का लालन-पालन करती है। पिता ईमानदारी और मेहनत से रोजी कमाता है। बच्चे माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं और अपना काम मन लगाकर करते हैं। घर में जब भी आवश्यकता पड़े, सब सदस्यों को एक दूसरे के काम में भी हाथ बँटाना चाहिए। एक परिवार के पाँच सदस्य हैं। माता-पिता का एक पुत्र है जिसका नाम मनजीत सिंह है। उसकी दो बहिनें हैं।

हरजीत कौर बड़ी है, स्वर्ण कौर छोटी है। माता अकेली घर का काम करके थक जाती है तो हरजीत सफाई और कपड़े धोकर माता को सहयोग देती है। वह अपनी छोटी बहन स्वर्ण कौर की पढ़ाई का भी ध्यान रखती है। बाज़ार से कोई वस्तु मँगवानी पड़े तो मनजीत सिंह तुरन्त लेने जाता है। मेहमान का सब स्वागत करते हैं। वे सब प्रेम-भाव से रहते हैं और इकट्ठे मिलकर खाना खाते हैं। उनमें से कोई बीमार पड़ जाए तो सब परेशान हो जाते हैं। उसकी सेवा-शुश्रूषा करते हैं। इस प्रकार सहयोग करने से यह घर स्वर्ग तुल्य बन गया है। तीन बच्चे माता-पिता की आँखों के तारे हैं और घर की इज़्ज़त को चार चाँद लगाते हैं।

पड़ोसियों से भी सहयोग करना चाहिए। एक अच्छा पड़ोसी बनना चाहिए। पड़ोसियों की कुशलता पूछनी चाहिए। बड़ों का सम्मान करना चाहिए। पड़ोसियों से मेलजोल बढ़ाना चाहिए। साफ मन से उनकी खुशी में सम्मिलित होना चाहिए। सेवा-भाव से उनकी बीमारी आदि में सहायता करनी चाहिए। उनकी सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखें। अपने घर की सफाई करके कूड़ा-कर्कट पड़ोसी के द्वार के आगे न फेंकें, ऐसी बातों से वे परेशान हो सकते हैं और विवाद हो सकता है। ऐसा कोई भी काम न करें, जिससे पड़ोसियों को कष्ट हो। इस तरह यदि आप सहयोग देंगे तो वह भी पीछे नहीं रहेंगे। इसी आपसी सहयोग से गली और मुहल्ले का वातावरण सुखद हो जाएगा।

स्कूल एक संस्था है। विद्यार्थी और अध्यापक ही नहीं, चपरासी से लेकर-मुख्याध्यापक तक सब लोग उस संस्था के अंग हैं। अपने-अपने स्थान पर सब लोग अपना-अपना काम करते हैं। सबके आपसी सहयोग से संस्था दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करती है। वहाँ पर आपको सहयोग के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। समय पर स्कूल में आकर, अपनी कक्षाओं में शान्ति-पूर्वक बैठ कर, संस्था के नियमों का पालन करके उसके अनुशासन में सहयोग दे सकते हैं। रद्दी कागज़ों को इधर-उधर न फेंककर उन्हें कोनों में रखे हुए टिन में डालकर संस्था की सफाई में सहयोग दे सकते हैं।

अपने सहपाठियों से भी सहयोग बढ़ाना चाहिए। मोहन और सोहन सहपाठी थे। एक बार मोहन घर से पेंसिल लाना भूल गया। सोहन के पास दो पेंसिलें थीं। मोहन ने सोहन से पेंसिल माँगी। सोहन ने अंगूठा दिखा दिया। मोहन का मुँह उतर गया। अब मोहन भी ऐसे मौके की प्रतीक्षा करने लगा। जिससे वह सोहन को नीचा दिखा सके। ऐसी बातों से आपस में घृणा और द्वेष बढ़ता है। इसके विपरीत यदि सोहन मोहन को पेंसिल देकर सहयोग देता तो वह उसे अपना मित्र बना लेता।

आपके सभी सहपाठी समान हैं, उनमें कोई बड़ा-छोटा नहीं। उनमें कोई भेद-भाव नहीं करना चाहिए। सबसे प्यार करना चाहिए। एक स्कूल की आठवीं कक्षा में मदन नामक एक छात्र था। वह निर्धन था। वह पुस्तकें-कापियाँ नहीं खरीद सकता था। उसके वस्त्र फटे पुराने थे। उसका सहपाठी महेन्द्र जमींदार का पुत्र था। उनके पास धन की कमी न थी। उसने अपने सहपाठी मदन को पुस्तकें, कापियाँ और कपड़े देकर सहायता की। धन का सदुपयोग यही है कि उससे दूसरों की सहायता की जाए। यदि आपका एक निर्धन सहपाठी निर्धनता के कारण निराश रहता है, उसका चेहरा खिलता नहीं, तो आपका अपने धन को अपने तक सीमित रखना एक सामाजिक अपराध है। धन की तरह ज्ञान को भी अपने तक सीमित नहीं रखना चाहिए। यदि आपकी गति गणित में अच्छी

है और आपके एक साथी को सवाल नहीं आता, आपका कर्त्तव्य बनता है कि आप उसे सवाल समझाएं। इसी तरह यदि कोई बालक हृष्ट-पुष्ट है तो उसका कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने कमज़ोर सहपाठी की रक्षा करे। उसे तंग करने की किसी की हिम्मत न हो। इस तरह आपसी सहयोग से आपकी कक्षा का वातावरण मैत्रीपूर्ण हो जायेगा।

खेल के मैदान में तो सहयोग का क्षेत्र विस्तृत हो जाता हैं। प्रत्येक टीम में सहयोग की भावना अनिवार्य है। मिल-जुल कर टीम भावना से खेल में भाग लेने से विजय प्राप्त होती है। विजय के लिए होड़ जरूरी है। विजय के लिए डट कर सहयोग भाव से प्रयत्न भी करना चाहिए। पर मूल बात विजय नहीं खेल की भावना है। खेलने के लिए खेलना चाहिए।प्रतिद्वंद्वीटीम भी जीत सकती है। ऐसे मौके पर आगे आकर प्रसन्न मन से उन्हें बधाई देनी चाहिए। खेल के मैदान में सब खिलाड़ी हैं। जरूरत पड़ने पर अपनेप्रतिद्वंद्वीकी भी सहायता करनी चाहिए। यदि कोईप्रतिद्वंद्वीगिर जाता है तो उसे उठाइए, यदि उसके चोट लग जाए तो उसको प्राथमिक सहायता दें। खेल के मैदान में सच्चे सहयोगी की भावना देखने को मिलती है। यही भावना जीवन के क्षेत्र में विकसित हो जाए तो घृणा और द्वेष का अन्त हो जाए, मानव-मानव में प्रेम-प्यार का प्रसार हो जाए।

खेलों के अतिरिक्त बालकों में सहयोग की भावना को विकसित करने के लिए अनेक संस्थाएँ स्थापित की गई हैं। जैसे रैड क्रॉस, स्काउट, गर्लगाइड, एन.एस.एस., एन.सी.सी. आदि। बालकों को उनका सदस्य बनना चाहिए। उनके कार्यक्रमों में नियमानुसार भाग लेना चाहिए। इससे एक पन्थ दो काज वाली बात होगी, उनका व्यक्तित्व विकसित होगा और समाज व देश भी उन्नति करेगा।

परिवार, पड़ोस, स्कूल के अतिरिक्त आप जिस गाँव, कस्बे अथवा नगर में रहते हैं, आप इसके भी अंग हैं। वहाँ हर प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। वहाँ सड़कें हैं, यातायात की व्यवस्था है, रोगियों के लिए अस्पताल है, स्कूल, डाकखाना आदि है। एक नागरिक के नाते आपका यह कर्त्तव्य बनता है कि आप उनका दुरुपयोग न करें। सड़कों पर इधर-उधर कूड़ा-कर्कट न फेंकें, एक तरफ रखे हुए कूड़ादानों में डालें। यदि सड़कों पर प्रकाश देने वाला लैम्प खराब हो, सफाई कर्मचारी गलियों में सफाई न करते हों, तो आप पंचायत अथवा नगरपालिका के अधिकारी का उस ओर ध्यान आकृष्ट करें। तोड़-फोड़ की कार्यवाही में भाग नहीं लेना चाहिए। सार्वजनिक सम्पत्ति सबकी अपनी है, वह सबके हित के लिए है। उसकी हानि आप सबकी हानि है, राष्ट्र की हानि है। आप सबको सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा करनी चाहिए।

इस तरह सहयोग से मानव अच्छा नागरिक बनता है। वह अपना ही हित नहीं सोचता, वह दूसरों का हित चिन्तन करता है और दूसरों के हित के लिए बराबर प्रयत्न करता है। वह नगर और देश की नहीं, विशाल हित की बात सोचता है। मानव जीवन-मात्र का हित ही उसका लक्ष्य हो जाता है। यही मानवता है। यही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है। इसका आधार सहयोग की भावना है जो घर, पड़ोस, स्कूल, खेल के मैदान और गाँव से क्रमशः विकसित होती हुई मानव-प्रेम का रूप धारण करती है।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਸਹਿਯੋਗ	=	सहयोग	ਸ਼ਾਮਿਲ	=	सम्मिलित
ਉਦੇਸ਼	=	उद्देश्य	ਮਿੱਤਰਤਾ ਪੂਰਨ	=	मैत्रीपूर्ण
ਮਦਮਸਤ	=	मदमस्त	ਸਰਬਜਨਕ	=	सार्वजनिक

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-

ਵਿਭਿੰਨਤਾ	=	विविधता	ਜ਼ਰੂਰੀ	=	अनिवार्य
ਛੂਹ	=	स्पर्श	ਵੱਖਰਾ	=	पृथक
ਕਬੂਤਰਾਂ ਦਾ ਰਾਜਾ	=	कपोतराज	ਉੱਨਤੀ	=	प्रगति
ਆਪਸੀ	=	परस्पर	ਸੇਵਾ-ਭਾਵ	=	सेवा-शुश्रूषा
ਕੁਦਰਤੀ	=	प्राकृतिक	ਬਰਾਬਰ	=	तुल्य
ਅੰਦਰੂਨੀ	=	आन्तरिक	ਕਲੇਸ਼	=	द्वेष
ਨਿਰਭਰ	=	अवलम्बित	ਹਿਸਾਬ	=	गणित
ਆਪਸੀ ਤਾਲਮੇਲ	=	अंगांगी	ਵਿਸ਼ਾਲ	=	विस्तृत
ਵਿਰੋਧੀ	=	प्रतिद्वंद्वी	ਮੁੱਢਲੀ	=	प्राथमिक

3. शब्दार्थ :-

पारस = वह पत्थर जिसके छूने से लोहा सोना बन जाता है।
मदमस्त = मद में चूर
कपोतराज = कबूतरों का राजा
हितोपदेश = विष्णु शर्मा कृत नीति शास्त्र संबंधी एक प्रसिद्ध ग्रंथ
अवलम्बित = निर्भर
सतत = निरन्तर, लगातार
प्रतिद्वन्द्वी = विरोधी
सार्वजनिक = सब जन का

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) सहयोग का क्या अर्थ है?
(ख) लंगड़े ने अंधे को क्या उपाय बताया?
(ग) कपोतराज चित्रग्रीव ने कबूतरों को क्या सलाह दी?
(घ) हमें पड़ोसियों से कैसा व्यवहार करना चाहिए?
(ङ) हमें अपने सहपाठियों से कैसा व्यवहार करना चाहिये?

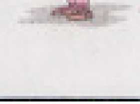

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) सहयोग के दो उदाहरण लिखें।

(ख) सहयोग से दोनों पक्षों को लाभ होता है। क्या आप इससे सहमत हैं ? अपने विचार लिखें।

6. नीचे दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार उत्तर लिखें :-

(क) सहयोग से लोहा भी सोना बन जाता है, उसका मूल्य सौ गुणा बढ़ जाता है। (यहाँ सर्वनाम कौन-सा है ?)

(ख) शरीर को पूर्णता अंगों के सहयोग से मिलती है। (भाववाचक संज्ञा छाँटें)

(ग) पड़ोसियों से सहयोग करना चाहिए। (संज्ञा शब्द छाँटकर उनका भेद लिखें)

(घ) सहयोग से कक्षा का वातावरण मैत्रीपूर्ण हो जायेगा। (जातिवाचक संज्ञा छाँटें)

(ङ) नदी के किनारे एक गाँव था। (सम्बन्धबोधक अव्यय छाँटें)

(च) बच्चे माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं और अपना काम मन लगाकर करते हैं। (योजक शब्द छाँटें)

7. इन मुहावरों के अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-

अंगूठा दिखाना ______ ______________________

आँखों का तारा ______ ______________________

चार चाँद लगाना ______ ______________________

मुँह उतर जाना ______ ______________________

एक पंथ दो काज ______ ______________________

जाल में फँसना ______ ______________________

मौत दिखाई देना ______ ______________________

धैर्य बंधवाना ______ ______________________

हक्का-बक्का रह जाना ______ ______________________

दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करना______________________

8. इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के वचन बदल कर वाक्य पुनः लिखें :-

(क) <u>यह तिनका है</u>।

ये तिनके हैं।

(ख) मुझे <u>रस्सा</u> दो।

मुझे............दो।

(ग) मेरी <u>आँख</u> में दर्द है।

मेरी..........में दर्द है।

(घ) मेरे पास कहानी की पुस्तक है।
मेरे पास .... की..............हैं।

(ङ) यह सूती कपड़ा है।
ये सूती............हैं।

(च) अपनी पेंसिल मुझे दो।
अपनी............मुझे दो।

9. **भाववाचक संज्ञा बनाएँ :**

पूर्ण = ____________ पशु = ____________
मित्र = ____________ आवश्यक = ____________
मानव = ____________ मनुष्य = ____________
सभ्य = ____________

10. **दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-**

मानव = ______, ______ शरीर = ______, ______
आँख = ______, ______ हाथ = ______, ______
मित्र = ______, ______

11. **विपरीतार्थक शब्द लिखें :-**

सहयोग = ____________ भाव = ____________
सभ्य = ____________ सुविधा = ____________

रचनात्मक अभिव्यक्ति

(ख) **मौखिक अभिव्यक्ति-** अपनी कल्पना से सहयोग पर आधारित एक कहानी कक्षा में सुना सकते हैं।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति -** (i) 'सहयोग जीवन का मूल मंत्र है।' इस विषय पर अपने विचार लिखें।

(ii) पाठ में दिये गये उदाहरणों के अतिरिक्त आप और कहाँ-कहाँ सहयोग दे सकते हैं। सोचिये और लिखिये।

वाघा बार्डर

वाघा बार्डर को 'एशिया की बर्लिन दीवार' के नाम से जाना जाता है। भारत और पाकिस्तान को परस्पर जोड़ने वाला यह बार्डर जी.टी. रोड पर स्थित है जिसके एक ओर लाहौर तथा दूसरी ओर अमृतसर नामक प्रसिद्ध नगर है।

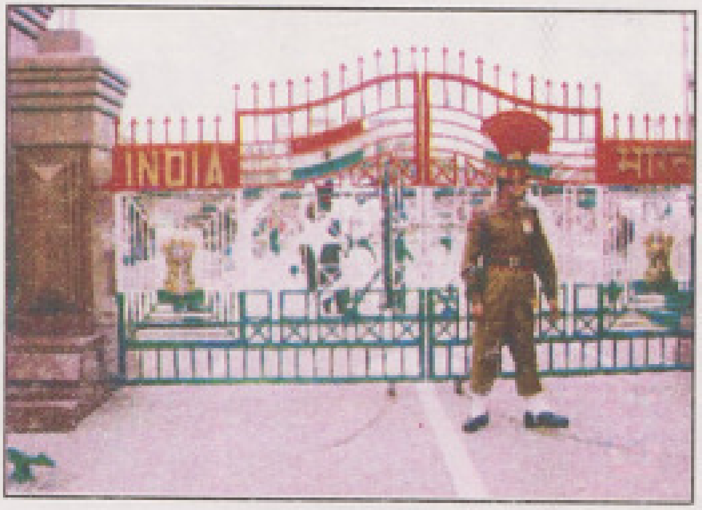

यह बार्डर अमृतसर से करीब 33 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अमृतसर से वाघा जाते समय खालसा कॉलेज गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के अतिरिक्त छेहरटा, खासा व अटारी नामक गाँव आते हैं। अटारी में मुख्य सड़क पर शहीद शाम सिंह अटारी की आदमकँद प्रतिमा सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र है। नेशनल हाइवे अथवा शेरशाह सूरी मार्ग जिसे प्राय: जी.टी रोड भी कहा जाता है, के रास्ते वाघा बार्डर पहुँचने के लिए अमृतसर से करीब एक घण्टा लगता है। निजी वाहन अथवा सैलानी गाड़ियों या फिर आटो रिक्शा द्वारा भी यहाँ पहुँचते हैं।

आज़ादी से पहले अंग्रेज़ी साम्राज्य के समय वाघा गाँव ब्रिटिश पंजाब की लाहौर डिवीज़न में स्थित था। 1947 में विभाजन के बाद यह गाँव भारत और पकिस्तान में बँट गया। दोनों देशों के बीच एकमात्र यातायात मार्ग होने के कारण 1947 के बाद कुली इस बार्डर के रास्ते सामान लाने और ले जाने का कार्य करते रहे हैं।

भारत व पाकिस्तान के स्वतन्त्रता दिवस पर क्रमश: 14 व 15 अगस्त को दोनों देशों के अमन पसन्द नागरिकों ने वाघा बार्डर पर मोमबत्तियाँ जलाकर पारस्परिक स्नेह व सौहार्द का इज़हार किया था। यह भारत व पाकिस्तान के समझौते के रूप में जनता के बदले हुए मन की प्रतिक्रिया स्वरूप था। पहले भी मोमबत्तियाँ जलाकर आधी रात को शान्तिमय जश्न होते रहे हैं। वैसे भी दोनों देशों की आम जनता द्वारा भारत-पाक के बीच व्यापार को उत्साहित करने के लिए वाघा बार्डर पर यातायात मार्ग को खोलने सम्बन्धी आवाज़ उठाई गई है। मार्च 2005 को बार्डर विषय पर विचार विमर्श करने के लिए भारतीय बार्डर सिक्योरिटी फोर्स (BSF) का एक दल वाघा बार्डर के

पाकिस्तानी रेंजर्ज़ से मिला। परिणामस्वरूप मई 2005 में पाकिस्तान द्वारा पाँच विशेष खाद्य-पदार्थों को वाघा बार्डर द्वारा कर मुक्त ले जाने की आज्ञा मिल गई। प्रथम अक्तूबर 2006 को पहली बार कुछ ट्रक वाघा बार्डर के पार सामान लेकर गए। भारत-पाक सम्बन्धों में उतार-चढ़ाव के बावजूद इस व्यापार में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

आज सैलानियों के लिए वाघा बार्डर एक विशेष आकर्षण का केन्द्र है। हर रोज़ सायं झण्डा उतारने (रिट्रीट)की रस्म होती है जिसे देखने के लिए भारत व पाकिस्तान के सैलानी अपने-अपने देश की गैलरी में इकट्ठे होते हैं। ऐतिहासिक जी.टी. रोड पर बार्डर को सफेद रंग द्वारा रेखांकित किया गया है। इस जगह सड़क को लोहे के दो गेटों द्वारा बन्द किया गया है जिसके चारों ओर कंटीली तारे हैं। दोनों गेटों के ऊपर दोनों देशों के राष्ट्रीय ध्वज लहराते हैं। अपने-अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए बी.एस.एफ. के जवान व पाकिस्तानी रेंजर्ज़ चौबीस घण्टे पूरी मुश्तैदी से पहरा देते हैं।

बार्डर की गैलरी तक पहुँचने के लिए करीब डेढ़-दो किलोमीटर लम्बी पंक्ति में स्त्रियों व पुरुषों को अलग-अलग जाँच के लिए जाना पड़ता है। जहाँ बी.एस.एफ. के जवान पूरी तरह तलाशी लेते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने साथ किसी प्रकार के खाने-पीने की सामग्री नहीं ले जा सकता। औरतों को अपने बड़े पर्स ले जाने की आज्ञा नहीं है। फोन व कैमरे ले जाने की आज्ञा है परन्तु फोन जैमर लगे होने के कारण ये कार्य नहीं करते। अन्दर गैलरी में आदमी व औरतें अलग-अलग बैठती हैं। झण्डा उतारने की रस्म से पहले स्पीकर ऊँची आवाज़ में देश भक्ति के गीतों का प्रसारण करते हैं।

उस समय सारा वातावरण भावमय हो जाता है। लोग जाति, धर्म, भाषा, भेद-भाव को भूलकर पूरी तरह राष्ट्रीयता के रंग में रंग जाते हैं। इनमें अधिकांश स्त्रियाँ होती हैं जो अपने भावों को नृत्य द्वारा भी प्रकट करती हैं।

इस सारी कार्यवाही में बी.एस.एफ. के जवानों की मुख्य भूमिका होती है। बी.एस.एफ. के जवानों द्वारा भारतीय दर्शकों को, जिनमें विदेशी भी शामिल होते हैं, तीन तरह के नारे लगाने की इजाज़त होती है (i) हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद (ii) भारत माता की जय (iii) वन्देमातरम्। पाकिस्तान क्षेत्र में वहाँ के पाकिस्तानी रेंजर्ज़ द्वारा पाकिस्तान ज़िन्दाबाद के नारे लगाये जाते हैं।

भारतीय दर्शकों में विशेषत: लड़कियों और स्त्रियों को हाथ में तिरंगा झण्डा लेकर मुख्य सड़क पर गेट के भीतर कुछ कदम दौड़ने की इज़ाज़त होती है। देश भक्ति के गीतों पर हाथ में तिरंगा लेकर दौड़ने वालों के हृदय में राष्ट्र पर मरने मिटने की भावना देखी जा सकती है।

दर्शक गैलरी पर भारतीय सैलानियों की भीड़ देखते ही बनती है। मुख्य द्वार के दोनों ओर बनी गैलरियों में 4000 लोगों की बैठने की क्षमता होती है। लेकिन वहाँ लगभग 8000 लोग एकत्र हो जाते हैं। रिट्रीट की रस्म प्राय: सायं 5.30 बजे आरम्भ होती है और करीब आधे पौने घण्टे बाद पूरी हो जाती है। इससे पूर्व बी.एस.एफ. के जवान पूरे उत्साह व जोश के साथ परेड में हिस्सा लेते हैं और पूरे वेग से अपने बूट धरती पर मारते हैं। उस समय दर्शक तालियाँ बजाकर सैनिकों की हौसला-अफजाई करते हैं।

झण्डा उतारते समय लोहे के दोनों गेट खोल दिए जाते हैं दोनों देशों के सैनिक एक दूसरे से हाथ मिलाते हैं व धीरे-धीरे दोनों देशों के जवान संगीत की मधुर ध्वनि में अपने-अपने देश के झण्डे उतारकर संभाल लेते हैं और गेटों को पुन: बन्द कर दिया जाता है।

पंजाब के मानचित्र पर स्थित अमृतसर जहाँ धार्मिक स्थान हरिमन्दिर साहिब व ऐतिहासिक स्थान जलियाँवाला बाग़ हो- वहाँ वाघा बार्डर को झण्डे उतारने की रस्म के तौर पर ही जाना जाता है। भारत सरकार द्वारा वाघा बार्डर को एक सैलानी केन्द्र के रूप में प्रोत्साहित किया जा रहा है। वहीं एक ग्लोबल पर्यटन कम्पलैक्स के निर्माण की योजना भी विचाराधीन है।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਬਾਰਡਰ	=	बार्डर	ਵਾਘਾ	=	वाघा
ਪਾਕਿਸਤਾਨ	=	पाकिस्तान	ਲਾਹੌਰ	=	लाहौर
ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ	=	अमृतसर	ਡਿਵੀਜ਼ਨ	=	डिवीजन

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-**

ਮੂਰਤੀ	=	प्रतिमा	ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਿਵਸ	=	स्वतन्त्रता दिवस
ਸਾਮਰਾਜ	=	साम्राज्य	ਆਵਾਜਾਈ	=	यातायात

3. **शब्दार्थ :-**

बार्डर = सीमा, हद

आदमक़द = मनुष्य के आकार का

प्रतिमा	=	मूर्ति
सैलानी	=	पर्यटक
एकमात्र	=	अकेला
सौहार्द	=	दोस्ती, सद्‌भाव, हृदय की सरलता
ऐतिहासिक	=	इतिहास से सम्बन्धित
मुस्तैदी	=	तेजी
क्षमता	=	सामर्थ्य
हौसला अफजाई	=	हौसला/धैर्य बढ़ाना

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) वाघा बार्डर को किस नाम से जाना जाता है ?

(ख) यह बार्डर किन दो देशों के मध्य स्थित है ?

(ग) इस बार्डर के दोनों ओर कौन-कौन से प्रसिद्ध नगर हैं ?

(घ) इसका विशेष आकर्षण क्या है ?

(ङ) बी.एस.एफ. के जवान कौन-कौन से नारे लगाते हैं ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) वाघा गाँव के बारे में आपने क्या जाना ?

(ख) बार्डर पर झण्डा उतारने की रस्म कैसे सम्पन्न होती है ?

6. **नये शब्द बनायें :-**

सुरक्षा	=	सुरक्षित
निर्माण	=	________
रेखांकन	=	________
आकर्षण	=	________
निर्माण	=	________
उत्साह	=	________
प्रोत्साहन	=	________
केन्द्र	=	________

7. **पर्यायवाची शब्द लिखें :-**

झण्डा = ________, ________

सैलानी = ________, ________

आज्ञा = ________, ________

अमन = ________, ________

8. रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखें :-

(क) सड़क को लोहे के गेट द्वारा बन्द किया गया है।

____

(ख) चारों ओर कँटीली तार लगी हुई है।

____

(ग) वह अपने भावों को नृत्य द्वारा प्रकट करता है।

____

(घ) अपने-अपने देश के झण्डे उतार लेते हैं।

____

9. रचनात्मक अभिव्यक्ति

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** – राष्ट्रीय पर्वों के अवसर पर देशभक्ति के गीत कक्षा में सुनायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति**- जब भी आपको अवसर मिले आप वाघा बार्डर अवश्य देखकर आयें। अपने अनुभव डायरी में लिखें।

बी.एस.एफ. का पूरा नाम बार्डर सिक्योरटी फोर्स है। हिंदी में इसे 'सीमा सुरक्षा बल' कहते हैं।

पाठ-16

गिरधर की कुंडलियाँ

(1)

बिना विचारे जो करे ; सो पाछे पछताय।
काम बिगारै आपनो ; जग में होत हँसाय।।
जग में होत हँसाय ; चित्त में चैन न पावे।
खान पान सम्मान ; राग रंग मनहि न भावे।।
कह गिरधर कविराय ; दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहि ; कियो जो बिना बिचारे।।

(2)

साईं सब संसार में ; मतलब का व्यवहार।
जब लगि पैसा गाँठ में ; तब लगि ताको यार।।
तब लगि ताको यार ; यार सँग ही सँग डोले।
पैसा रहा न पास ; यार मुख से नहिं बोले।।
कह गिरधर कविराय ; जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरज़ी प्रीति ; यार बिरला कोई साईं।।

(3)

दौलत पाय न कीजिए ; सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ; ठाउँ न रहत निदान।।
ठाउँ न रहत निदान ; जियत जग में यश लीजै।
मीठे वचन सुनाय ; विनय सब ही की कीजै।।
कह गिरधर कविराय ; अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निशि दिन चारि ; राहत सब ही के दौलत।।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਜਗ	=	जग	ਪੈਸਾ	=	पैसा
ਦੁੱਖ	=	दु:ख	ਭਾਈ	=	भाई
ਸਾਈਂ	=	साईं	ਸੁਪਨਾ	=	सपना

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-**

ਗੰਢ	=	गाँठ	ਰਾਤ	=	निशि/निशा
ਯਾਰ	=	दोस्त	ਧੰਨ	=	दौलत
ਘਮੰਡ	=	अभिमान			

3. **शब्दार्थ :-**

बिगारे = बिगाड़ना
यहि = यही; ऐसा ही
हँसाय = हँसी मज़ाक
बेगरज़ी = नि:स्वार्थ; बिना मतलब की
चैन = शान्ति
ठाउँ = स्थान
राग-रंग = प्रेमादि करने का आनन्द, ऐशो-आराम का आनन्द
निदान = अन्त में
मनहि = मन को
पाहुन = अतिथि ; मेहमान
भावे = अच्छा लगना
निशि = रात
टरत = दूर करना; टालना
ताको = उसका

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) बिना विचार के काम करने से क्या होता है ?
(ख) कवि के अनुसार प्राय: दोस्त कैसे होते हैं ?
(ग) चार दिन का मेहमान कौन है ?
(घ) प्राय: मनुष्य अभिमान क्यों करता है ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) दौलत पाकर मनुष्य को अभिमान क्यों नहीं करना चाहिए ?

(ख) बिना सोच-विचार के कोई काम करने से क्या दशा होती है ?

6. **उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरें :-**

(क) जब लगि पैसा गाँठ में; तब लगि ताको--------------।

(ख) पैसा रहा न पास-------------- मुख से नहिं बोले।

(ग) करत--------------प्रीति; यार बिरला कोई साई।

(घ) --------पाय न कीजिए; सपने में----------।

(ङ) ---------वचन सुनाय;---------सब ही की कीजै।।

(बेगरजी; दौलत; यार; मीठे; अभिमान; विनय)

7. **इन शब्दों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करें :-**

बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ______ ____________________

____

खटकना ______ ____________________

____

साईं सब संसार में मतलब का व्यवहार ______ ____________________

____

चार दिन की चान्दनी फिर अन्धेरी रात। ______ ____________________

____

8. **निम्न पद्यांशों का भावार्थ स्पष्ट करें :-**

(क) खटकत है जिय मांहि; कियो जो बिना विचारे।

(ख) करत बेगरजी प्रीति; यार विरला कोई साईं।

(ग) चंचल जल दिन चारि को ठाउँ न रहत निदान।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति-** नीतिपरक कुण्डलियों की रचना के कारण कवि गिरधर का हिन्दी साहित्य में अपना स्थान है। उनके साहित्य का अध्ययन करें। नीतिपरक सूक्तिमय कुण्डलियों को स्मरण करें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति -** निम्नलिखित पर अपने विचार लिखिये :-

(i) योजनाबद्ध तरीके से काम करने के क्या लाभ होते हैं ?

(ii) मतलबी मित्र तथा सच्चे मित्र में क्या अंतर है ?

(iii) धन-दौलत को चंचल क्यों कहा जाता है ?

पाठ-17

मेरा दम घुटता है

(नेपथ्य-चारों ओर हरे-भरे पेड़। दूर-दूर तक कहीं बस्तियाँ या इंसान नहीं दिख रहे हैं। यहाँ हवा की घटक गैसों की सभा चल रही है। सभा में ऑक्सीजन है, नाइट्रोजन और हाइड्रोजन हैं, कार्बन-डाई-ऑक्साइड व ओज़ोन भी है। यह कोई फलों का बगीचा है। शहर से दूर)

नाइट्रोजन : हमारी इस महीने की बैठक में आप सभी का स्वागत है। इस बार हमारे कुछ सदस्य दुबले और कमज़ोर दिख रहे हैं। ऐसे में सभा की अध्यक्षता के लिए मैं ऑक्सीजन को आमंत्रित करती हूँ। यह बताने की मुझे ज़रूरत नहीं है कि यह पृथ्वी पर जीवन का मूल आधार है।

(तालियों की आवाज़.....)

ऑक्सीजन : (हाँफते हुए) इस सम्मान के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। लेकिन मेरी झूठी तारीफ तो मत करो। कहने को तो मैं जीवनदायी हूँ। लेकिन आज मेरे जीवन को ही खतरा लग रहा है।

हाइड्रोजन : नहीं, ऑक्सीजन नहीं। ऐसा मत कहो। आपके बग़ैर मेरी तो हालत ही खराब हो जायेगी। आज हमारे और आपके साथ रहने से ही तो पृथ्वी पर पानी उपलब्ध है। दुनिया में आधे से अधिक भाग में पानी है। आपके बग़ैर पानी नहीं बन सकता। पानी नहीं तो जीवन कैसे संभव होगा?

ऑक्सीजन : धत् पगली। अरी हाइड्रो, मैं तो वायु में अपने अस्तित्व की बात कर रही थी। उस पर इन दिनों इतने काले-पीले दैत्यों ने हमला कर रखा है कि ...

नाइट्रोजन : अरे क्या बताऊँ? अपनी सभा के लिए कोई भी सुरक्षित जगह नहीं मिल रही थी। जहाँ जाती, वहीं वो काली-पीली ज़हरीली गैसें हमला कर देती थीं। लगने लगा है कि कहीं हमारा बहुमत ही ख़त्म न हो जाये। ये बाहरी गैसें इतनी तेज़ी से बढ़ रही हैं कि .. उन्होंने तो हमारी सेहत ही बिगाड़ डाली है।

हाइड्रोजन : देखो ना, हमारी ऑक्सीजन दीदी, दिनों-दिन सूखती जा रही है।

ऑक्सीजन : अरे, मैं तो बताना ही भूल गई। अभी बैठक में आते-आते भी मैं बाल-बाल बची। वो पास का कस्बा है न, उसके ऊपर से निकल रही थी कि कई काले-कलूटे राक्षस मेरी ओर आ लपके। कोई स्कूटर, बस से निकल रहा था, कोई ट्रैक्टर से ....उनसे जैसे-तैसे बची। तो मिल गई खूब ऊँची-सी चिमनी। किसी कारखाने की थी। उसके धुएँ में तो ऐसी तीखी गंध थी, कि बस.... उफ। दम ही घुट गया। बड़ी मुश्किल से जान बचा पाई।

नाइट्रोजन : मैं ही जानती हूँ कि इस बार सभा की जगह तलाशने में मुझे कितना सिर मारना पड़ा। कहीं ऐसी जगह नहीं दिख रही थी, जहाँ हमारा शुद्ध साम्राज्य हो। जिधर देखो उधर धुआँ बदबू, घुटन।

ऑक्सीजन : नाइट्रो, वो पिछली सभा की जगह का क्या हुआ? वह तो बड़ी अच्छी थी। कोई गाँव था न.....

नाइट्रोजन: क्या बताऊँ दीदी, उस गाँव में सड़क बन रही है। ढेर सारा तारकोल गरम कर रहे थे, खूब काला धुआँ था और तो और वहाँ खाना बनाने के लिए न जाने कैसी लकड़ी जला रहे हैं। चारों ओर धुएँ के कारण अंधेरा हो जाता है। वहाँ की तो रंगत ही बदल गई है। वहाँ हमारा कैसे गुज़ारा हो पाता?

हाइड्रोजन : अरी बहन! वह सिगरेट-बीड़ियों का धुआँ। हाय-हाय हमारा तो नुकसान करता ही है धरती पर रहने वाले लोगों को भी बीमार कर रहा है। पर आदमी है कि खुद का नुकसान खुद कर रहा है। मनुष्य को दमा, साँस से संबंधित रोग, फेफड़ों के रोग, त्वचा संबंधी बीमारियाँ सभी तो इसी वायु प्रदूषण से ही हो रही हैं.... वो क्या कहते है कि अपने ही पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारना... (आगे की आवाज़ हँसी में दब जाती है)

नेपथ्य ध्वनि : (और तभी वहाँ आ जाती है मिस कार्बन-डाइ-ऑक्साइड। मोटी काली, हड़बड़ी में भागती हुई।)

ऑक्सीजन : अरे कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, लगता है कि दौड़ती हुई आ रही हो, फिर भी देर कर दी, घड़ी देखो, पूरा आधा घंटा लेट हो। और-और, ये क्या रूप बना रखा है?

नाइट्रोजन : अध्यक्ष महोदय, इनकी दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ रही देह को नहीं देख रही हैं। इसको काला बनाने के स्टॉल गली-गली में लग गए हैं। तभी तो देखो, माशाअल्लाह क्या स्वास्थ्य बना है। अब ऐसे में कितना भी दौड़े लेट तो आना ही था। बेचारी कारखाने और गाड़ियों के धुएँ के कारण इसका रंग-रूप ही बदल रहा है....हाय....

(फिर ठहाकों की आवाज़)

कार्बन-डाइ-ऑक्साइड : (रुआँसी आवाज़ में) उड़ा लो। उड़ा लो मज़ाक। वायुमंडल में मेरी भागीदारी आधा प्रतिशत से भी कम थी और ये मानव जाति है कि मेरा मोटापा बढ़ाने पर तुली है। मेरे साथ-साथ मेरी बहन कार्बन-मोनो-ऑक्साइड की मात्रा अधिक बढ़ रही है। मुझसे ज्यादा तो वह मानव जाति को नुकसान कर रही है। और तुम तो अपने हो, तुम क्यों मुझे खलनायिका बना रहे हो। मैं तो पेड़-पौधों का जीवन हूँ।

ओज़ोन : (बिल्कुल बारीक धीमी आवाज़) और मुझ ओज़ोन के बारे में कभी सोचा? मेरी तो इतनी कम मात्रा थी कि लोग मुझे जानते तक नहीं थे। लेकिन ये धरती वाले मेरे विनाश पर तुले हैं। वे नहीं जान रहे कि मेरे विनाश के साथ ही धरती भी नहीं बचेगी।

नाइट्रोजन : अरी, इतनी सी तो तू है, तू क्या कर लेगी। मानव मुझे छेड़ने में संकोच नहीं कर रहा है जबकि वायुमंडल में मेरी भागीदारी तीन-चौथाई से अधिक है। तुम तो इत्ती-सी हो, चींटी के बराबर।

ओज़ोन : हाँ। हाँ। तुम लोग तो हर छोटे को कमज़ोर समझते हो। लेकिन मैं बता दूँ यदि मैं खत्म हो गई तो....तो.... धरती तो क्या तुम सब भी नहीं बचोगी।

हाइड्रोजन : माना कि तुम ऑक्सीजन दीदी की सबसे छोटी बेटी हो, लेकिन इसका क्या मतलब कुछ भी बोलती रहोगी, अब चुप हो जाओ वरना....।

ओज़ोन : वरना क्या? मुझसे लड़ोगे? विश्वास नहीं हो तो कभी सूरज से पूछ लेना। सूरज के प्रकाश में खतरनाक अल्ट्रा वायलेट किरणों से लड़ने की क्षमता सबसे अधिक मुझमें ही है वरना ये किरणें धरती के लोगों को कई बीमारियों का शिकार बना देंगी।

ऑक्सीजन : हाँ, ओज़ोन सही कह रही है। धरती से 10 से 50 किलोमीटर ऊँचाई पर वायुमंडल में ओज़ोन की पतली परत है। इन दिनों मानव जाति रेफ्रिजरेटरों और एयर कंडीशनरों का अंधाधुंध प्रयोग कर रही है। इसमें प्रशीतक के रूप में काम आने वाली एक रासायनिक गैस के कारण ओज़ोन की सुरक्षा परत टूटती-फूटती जा रही है।

हाइड्रोजन : अभी मेरी सहेली का एक पत्र स्वीडन से आया है।

ऑक्सीजन : क्या लिखा है बहन चिट्ठी में?

हाइड्रोजन : वह तो बड़ी दुखी है। उनके यहाँ पानी बरसने पर तेज़ाब बरस रहा है। उनके इलाके की हवा तो शुद्ध है लेकिन इंग्लैंड के कारखानों ने खूब ऊँची-ऊँची चिमनियाँ लगा ली हैं। जिससे निकला हुआ धुआँ तैरता हुआ स्वीडन पहुँच जाता है। कारखानों के धुएँ में नाइट्रोजन आक्साइड और सल्फर-डाइ-ऑक्साइड होती है जो पानी के साथ मिलकर अम्ल बन जाती है।

नाइट्रोजन : ऐसी बारिश तो हमारे यहाँ भी होने की संभावना है न?

कार्बन-डाइ-आक्साइड : अरे कहाँ देश-विदेश की बात कर रहे हो? मुझ पर विचार करो वरना मेरी मात्रा सीमा पार कर जायेगी। इसी कारण तो धरती का तापमान भी बढ़ रहा है।

ऑक्सीजन : बहन कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, तुम्हारा मोटापा घटाने और मेरी सेहत सुधारने का केवल एक ही उपाय है कि लोग अधिक पेड़ लगाएं।

नाइट्रोजन : हाँ। बिल्कुल सही बात कही बहन, पेड़ कार्बन-डाइ-ऑक्साइड की बढ़ती मात्रा को प्रकाश संश्लेषण वाली भोजन बनाने की क्रिया से सोख लेते हैं और ऑक्सीजन मुक्त करते हैं। इसलिए..। (सूत्रधार: तभी एक किसान बगीचे के पेड़ों पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करने लगता है। दवा छिड़कने के पम्प की आवाज़। कुछ चिड़ियों के उड़ने की ध्वनि।)

ऑक्सीजन : अरे, अरे भागो-भागो (घबराई हुई आवाज़) लगता है कि आदमी पेड़ों पर दवाई छिड़क रहा है। हाय! हाय! मेरा तो दम घुट रहा है।

हाइड्रोजन : दवाई के रसायन भी हमारे वायुमंडल में घुलते आ रहे हैं।भागो-भागो। पता नहीं, हमारे वायुमंडल की अगली बैठक के लिए कहीं शुद्ध स्थान मिलेगा भी कि नहीं..... भागो.......(भगदड़, दवा,पम्प, हाँफने, चीखने की आवाज़ें)

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-**

ਆਕਸੀਜਨ	=	ऑक्सीजन	ਕਾਰਬਨ-ਡਾਈ-ਆਕਸਾਈਡ	=	कार्बन-डाइ-ऑक्साइड
ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ	=	नाइट्रोजन	ਰੇਫ਼ਰੀਜਰੇਟਰ	=	रेफ्रिजरेटर
ਹਾਈਡ੍ਰੋਜਨ	=	हाइड्रोजन	ਪੇੜ-ਪੌਧੇ	=	पेड़-पौधे
ਓਜ਼ੋਨ	=	ओज़ोन	ਵਾਯੂਮੰਡਲ	=	वायुमण्डल

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-**

ਪਰਦੇ ਦੇ ਪਿੱਛੇ	=	नेपथ्य	ਰਾਜ	=	साम्राज्य
ਹੋਂਦ	=	अस्तित्व	ਲੁੱਕ	=	तारकोल
ਰਾਖਸ਼	=	दैत्य	ਸਿਹਤ	=	स्वास्थ्य

3. **शब्दार्थ**

नेपथ्य	=	पर्दे के पीछे
घटक	=	तत्व
जीवनदायी	=	जीवन देने वाली
अस्तित्व	=	होंद, होने का भाव
दैत्य	=	राक्षस
माशाअल्लाह	=	जो अल्लाह चाहे
खलनायिका	=	नाटक या उपन्यास के मुख्य नायक का प्रतिद्वंद्वी जो लक्ष्य प्राप्ति में रुकावटें उपस्थित करती है।
क्षमता	=	सामर्थ्य

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) हवा की घटक गैसें कौन-कौन सी हैं ?

(ख) पृथ्वी पर जीवन का मूल आधार क्या है ?

(ग) पानी की घटक कौन-कौन सी गैसें हैं ?

(घ) इस एकाँकी में काले-कलूटे राक्षस किसे कहा गया है ?

(ङ) वायु प्रदूषण से कौन-कौन से रोग हो रहे हैं ?

(च) कार्बन-डाइ-ऑक्साइड का रूप क्यों बदल रहा है ?

(छ) वह कौन-सी गैस है जो कार्बन-डाइ-ऑक्साइड से अधिक मानव जाति का नुकसान कर रही है ?

(ज) ओज़ोन की सुरक्षा परत किस गैस के कारण टूटती-फूटती जा रही है ?

(झ) धरती का तापमान किस गैस के कारण बढ़ रहा है ?

(ञ) कार्बन-डाइ-ऑक्साइड गैस ने अपनी सेहत सुधारने का क्या उपाय बताया ?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) ऑक्सीजन गैस को जीवन का मूल आधार क्यों कहा जाता है ?

(ख) जहरीली गैसों के स्रोत कौन-कौन से हैं ?

(ग) वायुमण्डल का तापमान बढ़ाने में ओज़ोन की क्या भूमिका है ?

(घ) अम्लीय वर्षा किस कारण होती है ?

(ङ) पेड़ किस प्रकार वायुमण्डल को शुद्ध करते हैं ?

(च) लेखक ने इस बैठक के माध्यम से क्या संदेश दिया है ?

6. इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करें :-

नेपथ्य ____ ________________________

घटक ____ ________________________

जीवनदायी ____ ________________________

अस्तित्व ____ ________________________

क्षमता ____ ________________________

7. इन मुहावरों के अर्थ दिये गये हैं। अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

दिनों-दिन सूखना - कमज़ोर होते जाना (यहाँ वायुमण्डल में ऑक्सीजन की मात्रा कम होना)

____

बाल-बाल बचना = कठिनता से बचाव होना = ______

जान बचाना = जीवित रखना = ______

सिर मारना = सोच-विचार करना = ______

अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना= अपनी ही गलती से अपनी हानि करना

= ______

8. (i) लिंग बदलें :-

सदस्य = ______

नायिका = ______

खलनायक = ______

(ii) इन गैसों के लिंग बतायें :-

ऑक्सीजन = ______

कार्बन-डाइ-ऑक्साइड = ______

हाइड्रोजन = ______

नाइट्रोजन = ______

ओज़ोन = ______

9. 'इत' और 'इक' शब्दांश लगाकर नये शब्द बनायें :-

इंसान + इत = इंसानियत	रसायन + इक = रासायनिक
सुरक्षा + इत = ______	समाज + इक = ______
सम्बन्ध + इत = ______	भूगोल + इक = ______
आमंत्रण + इत = ______	परिवार + इक = ______

10. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

सूरज = ______, ______

हवा = ______, ______

किरण = ______, ______

रात = ________, ________

पेड़ = ________, ________

दिन = ________, ________

11. विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

अंधेरा = ________

मुक्त = ________

बहुमत = ________

दुर्बल = ________

कमज़ोर = ________

12. इन शब्दों के भिन्न अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

मूल = मुख्य = इस सभा का मूल उद्देश्य क्या है ?

= जड़ = पेड़ की मूल पर ही उसका जीवन टिका है।

भाग = हिस्सा = ________________

बँटवारा = ________________

घड़ी = पानी का छोटा घड़ा = ________________

समय बतलाने वाला छोटा यंत्र = ________________

बैठक=बैठने का कमरा = ________________

चौपाल, अधिवेशन (जैसे संसद की बैठक) ________________

13. इन गैसों के चिह्न समझें :-

ऑक्सीजन O_2

नाइट्रोजन N_2

कार्बन-डाइ-ऑक्साइड CO_2

हाइड्रोजन H_2

कार्बन-मोनो-ऑक्साइड Co

ओज़ोन O_3

रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

मौखिक अभिव्यक्ति- (क) इस संवादात्मक पाठ का वातावरण दिवस आदि विशेष अवसर पर अभिनय करें।

(ख) 'पर्यावरण प्रदूषण' पर अपने विचार कक्षा में सुनायें।

(ग) अपने विज्ञान के अध्यापक से पूछो कि रात को पेड़ों के नीचे क्यों नहीं सोना चाहिए?

लिखित अभिव्यक्ति- (क) यह एकांकी आपके द्वारा पढ़े गये अन्य एकाँकियों से किस प्रकार भिन्न है? क्या आपको इसका शीर्षक 'मेरा दम घुटता है' पसन्द आया? अपने विचार लिखें।

(ख) विज्ञान की प्रयोगशाला में पाठ में आई गैसों को तैयार करो और इनके गुण-अवगुण कापी में नोट करो।

(ग) 'पर्यावरण बचाओ' विषय पर नारे लिखें।

पाठ-18

अन्तरिक्ष-परी : कल्पना चावला

प्रत्येक मनुष्य सपने देखता है। सपने ही किसी लक्ष्य की नींव होते हैं। किन्तु यह भी सच है कि सपने केवल सोचने से ही सच नहीं हो जाते। उनको पूरा करने के लिए अनथक परिश्रम, दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास व एकाग्रता की अत्यन्त आवश्यकता होती है। अत: जो अपने सपनों को साकार करने के लिए जी-तोड़ मेहनत करता है, उसके सफलता निश्चित रूप से मिलती ही है। वह कितना सौभाग्यशाली होता है जो अपने सपनों को साकार होते देखता है।

बच्चो! ऐसे ही बचपन में उड़ते हुए विमानों को देखकर आसमान की सैर करने का सपना कल्पना चावला ने देखा और बड़े होने पर उस सपने को साकार कर दिखाया। कल्पना चावला का भी मानना था कि सपनों से सफलता की ओर जाने की राह मौजूद होती है। व्यक्ति में उसे खोजने की दृष्टि, उस पर चलने का साहस और उसका अनुसरण करने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए। कल्पना चावला का जन्म 1 जुलाई 1961 में हरियाणा राज्य के करनाल शहर में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। उसकी माँ का नाम श्रीमती संज्योति व पिता का नाम श्री बन्नारसी लाल चावला था। वह अपने परिवार में चार भाई बहनों में सबसे छोटी थी। सभी उसे घर में प्यार से मोंटू नाम से बुलाते थे। कल्पना की प्रारंभिक शिक्षा घर के नज़दीक स्थित टैगोर बाल निकेतन स्कूल में हुई। स्कूल में वह सभी अध्यापकों की चहेती थी। वह शुरू से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति की थी। आसमान में विमानों को उड़ते देखकर वह बरबस ही उनकी ओर आकर्षित हो जाती थी। वह सदा यही चाहती थी कि उसके सपनों को भी पंख लग जायें और एक दिन वह भी दूर गगन की सैर करे। उसे विमानों के प्रति इस कद्र लगाव था कि स्कूल की क्राफ्ट की कक्षा में भी वह विमान बनाया करती थी।

जब कल्पना आठवीं कक्षा में थी तो उसने इंजीनियर बनने की इच्छा अपने माता-पिता को ज़ाहिर की। उसके माता-पिता भी उसकी आकांक्षा व भावनाओं को बाखूबी समझते थे इसलिए उन्होंने उसके सपने को पूरा करने में उसकी भरपूर मदद की। सन् 1978 में कल्पना ने प्री-इंजीनियरिंग की परीक्षा पास कर ली। उसने अपनी लगन, निष्ठा व कड़ी मेहनत से पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज चंडीगढ़ से सन् 1982 में ऐरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। यह उसका पसंदीदा विषय था। वह कभी भी इस विषय में बोरयित महसूस नहीं करती थी। पढ़ाई के साथ-साथ वह कॉलेज के उत्सवों, सभाओं आदि में भी सक्रिय रूप से भाग लेती थी। स्नातक डिग्री पूरी होने के बाद वह आगे अमेरिका जाकर इंजीनियरिंग में ही स्नातकोत्तर की डिग्री लेना चाहती थी। कहा भी गया है"जहाँ चाह वहाँ राह।"अत: कल्पना की प्रतिभा, निष्ठा, परिश्रम, जिज्ञासा तथा आत्मविश्वास को देखते हुए उसके परिवार ने उसे अमेरिका में पढ़ाई करने की स्वीकृति दे दी।

अमेरिका में रहकर पढ़ाई करने के लिए तो वह बेहद उत्सुक थी। अंतत: वह स्नातकोत्तर की डिग्री लेने के लिए अमेरिका पहुँच ही गयी। वहाँ उसे टैक्सास विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया। वहाँ उसकी भेंट एक अमेरिकी जीन पियरे हैरिसन से हुई। धीरे-धीरे वह उसका सबसे अच्छा मित्र बन गया। इसी विश्वविद्यालय परिसर में एक फ्लाइंग क्लब भी था। हैरिसन 'फ्लाइंग क्लब' का छात्र था। कल्पना भी 'फ्लाइंग क्लब' में जाने लगी। अब मन ही मन उसे लगने लगा था कि हवाई जहाज़ उड़ाने का उसका सपना साकार हो जायेगा। सन 1983 में कल्पना और हैरिसन का विवाह हो गया। वह पढ़ाई भी साथ ही ज़ोरों से कर रही थी अत: सन् 1984 में टैक्सास विश्वविद्यालय से उसने ऐरोस्पेस इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। तदनन्तर सन् 1988 में उसने कोलोरेडो विश्वविद्यालय से ऐरोस्पेस इंजीनियरिंग में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। वह अपने प्रेरक व उत्साही पति के साथ उड़ान की बारीकियों को सीखती थी। कुछ ही समय के भीतर उसने जहाज़ उड़ाने का लाइसेंस भी ले लिया था। अब तो वह निरन्तर जहाज़ों की कलाबाज़ी का आनन्द लेती व अपने मित्रों को भी हवाई सैर कराती। सन् 1993 में कल्पना ने अमेरिका में कैलीफोर्निया की एक कम्पनी ओवरसेट मेथड्स इन्कॉर्पोरेशन में उपाध्यक्ष के पद पर भविष्य के अन्तरिक्ष अभियानों की रूपरेखा के लिए रिसर्च वैज्ञानिक का कार्य किया।

यह बात पूर्णत: सत्य है कि सच्ची लगन, जी-तोड़ मेहनत व सतत अभ्यास कभी निष्फल नहीं जाता। वह देर-सवेर ज़रूर फलीभूत होता है। एक दिन दिसम्बर 1994 में नासा (नेशनल एयरोनॉटिकल एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) के एक अधिकारी ने टेलीफ़ोन पर कल्पना को बताया कि उन्होंने उसे अंतरिक्ष यात्री के रूप में चुना है। उन्होंने उसे अन्तरिक्ष यात्रियों के लिए आयोजित की जाने वाली कार्यशाला में भाग लेने का निमंत्रण भी दिया। यह सब सुनकर कल्पना की खुशी का ठिकाना न रहा। आज उसके कानों ने वह बात सुनी जिसका उसे वर्षों से इन्तज़ार था। यह एक ऐसा अवसर था जिसके लिए दुनिया के बड़े-बड़े वैज्ञानिक तरसते हैं।

अन्तरिक्ष यात्री के रूप में चुने जाने के बाद उसका आत्मविश्वास और भी बढ़ गया। वह जहाज़ों को उड़ाने में तो पहले ही कुशल थी किन्तु अन्तरिक्ष में उड़ने के अवसर को लेकर वह बहुत ही उत्साहित थी। 16 मार्च 1995 को कल्पना ने एक साल का प्रशिक्षण शुरू किया। प्रशिक्षण के बाद कल्पना की अन्तरिक्ष यात्री के प्रतिनिधि के रूप में तकनीकी क्षेत्रों में नियुक्ति की गयी। यहाँ पर रोबोटिक उपकरणों का विकास और अन्तरिक्ष यान को नियंत्रित करने वाले साफ्ट वेयर की शटल एवियोनिक्स प्रयोगशाला में परीक्षण करना इसके मुख्य काम थे।

अब कल्पना की ज़िंदगी में वह दिन भी आ गया जिसके वह सपने देखती थी। कल्पना ने अपने दल के साथ एस.टी.एस. (स्पेस ट्रांस्पोर्टेशन सिस्टम - अंतरिक्ष परिवहन प्रणाली) 87 अंतरिक्ष यान द्वारा 19 नवम्बर 1997 को भारतीय समयानुसार दोपहर 2.37 बजे अपनी पहली उड़ान भरी। यह मिशन अन्तरिक्ष में 17 दिन 16 घंटे 32 मिनट रहा और फिर धरती पर लौट आया। इसमें अन्तरिक्ष में भारहीनता से भौतिक क्रियाओं को प्रभावित करने वाले परीक्षणों पर जोर दिया गया।

कल्पना की योग्यता, परिश्रम, अदम्य साहस को देखते हुए नासा ने एक बार फिर उसे अन्तरिक्ष यात्रा के लिए चुना। कल्पना की दूसरी और अंतिम उड़ान 16 जनवरी 2003 को अन्तरिक्ष यान 'कोलम्बिया' से शुरू हुई। कल्पना को संगीत से बेहद लगाव था। वह भरतनाट्यम भी जानती थी। अपनी इस अंतरिक्ष यात्रा पर वह अपने साथ हरीप्रसाद चौरसिया का बांसुरी वादन, रविशंकर के सितार, नुसरत फतह अली खाँ के सूफी कलाम आदि की एलबम सी.डी. ले गयी थी। इस मिशन में अंतरिक्ष में 80 परीक्षण एवं प्रयोग किये गये। 16 दिनों के अन्तरिक्ष अभियान से लौट रहा यह अमेरिकी अन्तरिक्ष यान 1 फरवरी 2003 को पृथ्वी से 63 किलोमीटर की ऊँचाई पर एक बड़े धमाके के साथ टूटकर बिखर गया। इस यान का मलबा अमेरिका के टेक्सॉस शहर में गिरा जहाँ कल्पना ने अपनी स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की थी। कल्पना समेत शेष अन्य छः अन्तरिक्ष यात्री अन्तरिक्ष में विलीन हो गये।

सारे विश्व के लिए यह एक दिल दहला देने वाली घटना थी। जहाँ सभी अन्तरिक्ष यात्रियों के लौटने का इन्तज़ार कर रहे थे वहीं एक दम से सभी दुःख के सागर में डूब गये। अमेरिका के मानव अन्तरिक्ष उड़ान के इतिहास में यह पहला अवसर था जब कोई अन्तरिक्ष यान अपने मिशन को सफतापूर्वक सम्पन्नकरने के बाद पृथ्वी पर लौटते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। कल्पना के परिवार के सदस्य उसके स्वागत के लिए तो पहले से ही अमेरिका पहुँच गये थे। वे उसकी वापसी की प्रतीक्षा में थे किन्तु कमबख़्त वक़्त ने ऐसा होने न दिया। भारत की होनहार कल्पना सभी को उस दिन बिलखता छोड़कर कहीं कल्पनाओं में खो गयी किन्तु आज भी वह सभी के दिलों पर राज करती है। युवाओं के लिए तो वह निस्संदेह प्रेरणा स्रोत रही है और रहेगी। पूरा विश्व उसे नमन करता है।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਆਤਮਵਿਸ਼ਵਾਸ	=	आत्मविश्वास	ਵਿਦੇਸ਼	=	विदेश
ਸਫਲਤਾ	=	सफलता	ਅਮਰੀਕਾ	=	अमेरिका
ਸਕੂਲ	=	स्कूल	ਤਕਨੀਕੀ	=	तकनीकी
ਸ਼ੁਰੂ	=	शुरू	ਪ੍ਰਯੋਗਸ਼ਾਲਾ	=	प्रयोगशाला
ਵਿਸ਼ਾ	=	विषय	ਵਿਅਕਤੀ	=	व्यक्ति
ਮਿੱਤਰ	=	मित्र	ਅਧਿਕਾਰੀ	=	अधिकारी

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-

ਜਮਾਤ	=	कक्षा	ਬਾਕੀ	=	शेष
ਵਿਆਹ	=	विवाह	ਉਡੀਕ	=	प्रतीक्षा
ਬੁਲਾਉਣਾ	=	निमंत्रण	ਸਿੱਖਲਾਈ	=	प्रशिक्षण
ਮੌਕਾ	=	अवसर	ਮਿਹਨਤ	=	परिश्रम

3. शब्दार्थ :-

स्नातक	=	विश्वविद्‌यालय की उपाधि
स्नातकोत्तर	=	स्नातक की डिग्री के ऊपर की उपाधि
प्रवृत्ति	=	मन का झुकाव
बरबस	=	जबरदस्ती
इंजीनियरिंग	=	इंजीनियर की पढ़ाई
अंतरिक्ष	=	आकाश
उपाध्यक्ष	=	संस्था, समिति में अध्यक्ष का सहायक
अदम्य	=	प्रबल, प्रचंड, जो दबाया न जा सके

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(क) सपने कैसे पूरे होते हैं ?

(ख) बचपन से ही कल्पना चावला का क्या सपना था ?

(ग) कल्पना चावला का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

(घ) कल्पना का विवाह कब और किससे हुआ ?

(ङ) कल्पना की प्रारम्भिक शिक्षा कहाँ पूरी हुई ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) कल्पना चावला का सपना कब और कैसे पूरा हुआ ?

(ख) कल्पना की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा उसकी जीवन की अंतिम यात्रा बनी ? स्पष्ट करें।

(ग) कल्पना चावला के जीवन से आप क्या प्रेरणा लेते हैं ?

6. **निम्नलिखित साल कल्पना चावला के जीवन में क्यों महत्वपूर्ण थे ?**

साल	महत्वपूर्ण क्यों ?
1978	______________________
1982	______________________
1984	______________________
1988	______________________
1994	______________________
1997	______________________

7. **निम्नलिखित शब्दों के वाक्य इस तरह बनायें ताकि अर्थ स्पष्ट हो जायें :-**

शब्द	वाक्य
अनुसरण	______________________
एकाग्रता	______________________
आकर्षित	______________________
आकांक्षा	______________________
नियंत्रित	______________________
नियुक्ति	______________________
परीक्षण	______________________
परिसर	______________________

8. इन मुहावरे/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-

जहाँ चाह वहाँ राह	______	______________________
दु:ख के सागर में डूब जाना	______	______________________
दिलों पर राज करना	______	______________________
खुशी का ठिकाना न रहना	______	______________________
दिल दहला देना	______	______________________

9. **इन वाक्यों में क्रिया अकर्मक है अथवा सकर्मक :-**

(क) स्कूल में वह सभी अध्यापकों की चहेती थी। ________

(ख) आसमान में विमानों को उड़ता देखकर वह उनकी ओर आकर्षित हो जाती थी। ________

(ग) वह स्नातकोत्तर की डिग्री लेने के लिए अमेरिका पहुँच गयी। ________

(घ) कल्पना ने 19 नवम्बर 1997 को अंतरिक्ष में अपनी पहली उड़ान भरी। ________

(ङ) प्रत्येक मनुष्य सपने देखता है। ________

(च) बड़े होने पर कल्पना ने अपने सपने को साकार कर दिखाया। ________

(छ) नासा ने उसे एक बार फिर अन्तरिक्ष यात्रा के लिए चुना। ________

10. **निम्नलिखित पंजाबी वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करें :-**

(क) ਇਹ ਉਸਦਾ ਮਨਪਸੰਦ ਵਿਸ਼ਾ ਸੀ।

(ख) ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਛੋਟੀ ਸੀ।

(ग) ਕੱਲਪਨਾ ਚਾਵਲਾ ਨੂੰ ਸੰਗੀਤ ਬੇਹਦ ਪਸੰਦ ਸੀ।

(घ) ਉਹ ਜਹਾਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਉਡਾਉਣ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਹੀ ਮਾਹਿਰ ਸੀ।

(ङ) ਅੱਜ ਵੀ ਉਹ ਸਾਰਿਆਂ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਤੇ ਰਾਜ ਕਰਦੀ ਹੈ।

11. रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** - 'जहाँ चाह वहाँ राह' विषय पर अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत करें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति**-

(i) आपका क्या सपना है? लिखें

(ii) कल्पना चावला के बाद सुनीता विलियम्स ने भी अन्तरिक्ष की यात्रा की है। उनके बारे में अध्यापक/अभिभावक से जानकारी लेकर पाँच वाक्य लिखें।

(iii) भारत में सबसे पहले कौन-सा वैज्ञानिक अंतरिक्ष पर गया? पता करें और लिखें।

पाठ-19

होंगे कामयाब

होंगे कामयाब,
होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब, एक दिन
हो हो मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन ....

होगी शान्ति चारों ओर,
होगी शान्ति चारों ओर,
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन ....
हो हो मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन

हम चलेंगे साथ-साथ,
डाल हाथों में हाथ,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन ......
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन

नहीं डर किसी का आज,
नहीं डर किसी का आज,
नहीं डर किसी का आज के दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास,
पूरा है विश्वास,
नहीं डर किसी का आज के दिन

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਸ਼ਾਂਤੀ	=	शान्ति	ਵਿਸ਼ਵਾਸ	=	विश्वास
ਡਰ/ਭੈ	=	भय	ਅੱਜ	=	आज

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-

ਸਫਲ	= कामयाब	ਚੁਫੇਰੇ ਪਾਸੇ	= चारों ओर
ਮਿਲ ਜੁਲ ਕੇ	= साथ-साथ	ਸਹਿਯੋਗ ਕਰਦੇ ਹੋਏ	= डाल हाथों में हाथ

3. इन काव्य-पंक्तियों में खाली स्थानों में उपयुक्त शब्द भरें :-

(क) हम होंगे कामयाब ------------ दिन
हो हो मन में है ------------,
पूरा है ------------,
------------ कामयाब एक दिन।

(ख) नहीं ------------ किसी का आज
नहीं ------------ किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन।

4. कवि को चार बातों का पूरा विश्वास है। कविता में से इन तीनों को चुन कर लिखें :-

(क) किसी का डर नहीं होगा
(ख) ....
(ग) ....
(घ) ....

5. 'होंगे कामयाब' कविता का भावार्थ लिखें।

6. नीचे लिखी पंक्तियों का सरलार्थ करें :-

हम चलेंगे साथ-साथ
डाल हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** - कक्षा के विद्यार्थी छोटे-छोटे समूह में मिल कर इस कविता को गायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति**- जीवन में कामयाब होने के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है ? चार-पाँच वाक्यों में लिखें।

पाठ-20

सरफ़रोशी की तमन्ना

पात्र परिचय

विद्यावती	: भगत सिंह की माँ
अमरो	: भगत सिंह की बहन
भगत	: भगत सिंह
बटुक	: बटुकेश्वर दत्त
आज़ाद	: चंद्रशेखर आज़ाद
दुर्गा	: भगवती चरण की पत्नी (स्वतंत्रता सेनानी)
बेबे	: जेल में महिला कर्मचारी

दृश्य : एक

स्थान : लायलपुर (लाहौर)

विद्यावती : मेरे लाल को किसकी नज़र लग गई। तीन दिन हो गए स्कूल से नहीं लौटा!

अमरो : दिल छोटा न कर माँ.... वीरा जल्द आयेगा।

विद्यावती : तेरे मुँह में घी शक्कर..... पर जब से अंग्रेज़ों ने जलियाँवाले बाग़ में वहशियाना खेल खेला है, डर लगता है।

अमरो : सच माँ, अंग्रेज़ पागल हो गए हैं, पागल और पागल जानवर की उम्र अधिक नहीं होती।

विद्यावती : तभी तो डर लगता है, कहीं तेरे वीरे को कुछ ......

अमरो : शुभ-शुभ बोल माँ .... देखना, ईश्वर सब ठीक करेगा।
(दरवाज़े पर ठक-ठक की आवाज़ आती है, अमरो दरवाज़ा खोलती है)

अमरो : वीरे, ओ वीरे! कहाँ चला गया था?

भगत : (दौड़कर माँ से चिपकते हुए) अमृतसर...... (सिसकियाँ लेने लगता है)

विद्यावती : इतनी दूर ... अकेला! रब्ब का लाख-लाख शुक्र है।

भगत : माँ, मैं जलियाँवाले बाग़ की पावन धरती को प्रणाम करने गया था। जहाँ वहशी गोरों ने हज़ारों स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़ों को शहीद कर दिया। वहाँ की दीवारों, पेड़ों, कुँओं से शहीदों की कुर्बानी चीख-चीख कर कह रही है ...... ऐ फिरंगी! सामान बाँध ले। वरना, सम्भलने का मौका भी न मिलेगा। माँ? कुरुक्षेत्र की धरती पर दोनों ओर योद्धा थे पर गोरों ने तो निहत्थे भारतीयों पर गोलियाँ बरसायी हैं।

अमरो : वीरे, तू बड़ा हो गया है। आज तू तो बड़ी-बड़ी बातें करता है।

भगत : देख दीदी, देखो माँ, शहीदों के लहू से रंगी यह मिट्टी, इसकी सौगन्ध माँ, हम गोरों को यहाँ से भगाकर भारत माँ को आज़ाद करायेंगे।

विद्या : अहा! तेरे जैसे पुत्र को जन्म देकर मैं धन्य हुई। ईश्वर तेरी रक्षा करे।

भगत : माँ, चिंगारी भड़क उठी है। भैया सुखदेव के स्कूल में गोरा सिपाही सैल्यूट करने को बोला। सुखदेव ने उसकी बेंत पकड़ ली।

विद्या : नन्ही जान, और इतना साहस! धन्य! उसने देश का नाम उज्ज्वल कर दिया।

भगत : सच माँ सुखदेव बेंत खाता रहा, उफ तक न बोला। बेचारा गोरा खिसियानी बिल्ली-सा मुँह लेकर चला गया।

विद्या : सच, मेरे लाल तुम जैसे वीर सपूतों के जोश पर मैं वारी जाऊँ। अब माँ भारती अवश्य मुक्त होंगी। अब स्वराज्य का परचम लहरा कर ही रहेगा।

दृश्य : दो

स्थान : दिल्ली में क्रान्तिकारियों का गुप्त स्थान (भगत सिंह का प्रवेश)

आज़ाद : आओ भगत, तुम्हारे आने से हम क्रान्तिकारियों में नया जोश भर गया। बिस्मिल और असफ़ाक की शहीदी से मन विचलित हो रहा था।

भगत : काकोरी के जांबाज़ों की कुर्बानी व्यर्थ न जाएगी। गोरा नहीं जानता एक बिस्मिल नहीं हम सभी ने बचपन से बसंती रंग में अपने को रंग लिया है।

सुखदेव : बसंती के बवंडर ने अंग्रेज़ राज को उड़ा देना है।

आज़ाद : समय कम, काम अधिक है। आज से हमारे संघ का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक संघ होगा और योजनाओं को कार्य रूप देने की ज़िम्मेवारी भगत सिंह पर। कहो, क्या विचार है ?

सभी : इन्कलाब ज़िन्दाबाद।

भगत : अहो भाग्य! देखना, एक दिन हम दीवानों की टोली आज़ादी की दुल्हन को ब्याह लाएगी, हिन्दुस्तान आज़ाद होगा।

सभी : भारत माता की जय ...... इन्कलाब ज़िन्दाबाद।

राजगुरु : सुना है साइमन भारत आ रहा है।

सुखदेव : (क्रोध से) जले पर नमक छिड़कने ...! क्या अभी तक अंग्रेज़ों के अत्याचार कम हैं ?

आज़ाद : धीरज रखो, साथियो! हम सब इसका विरोध करेंगे।

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने नेतृत्व करना स्वीकार किया है। ध्यान रहे, अंग्रेज़ दल-बल के साथ हम पर वार करेगा। चलो, प्रदर्शन की तैयारी करें। इन्कलाब ज़िन्दाबाद, भारत माता की जय।

सभी : इन्कलाब ज़िंदाबाद, भारत माता की जय।

(क्रान्तिकारियों के प्रदर्शन को अंग्रेज़ों ने कुचलने का प्रयास किया। लाला जी पर लाठियाँ बरसायीं जिससे उनकी मृत्यु हो गई। क्रान्तिकारियों में शोक की लहर दौड़ गई)

दृश्य : तीन

स्थान : क्रान्तिकारियों का दफ़्तर

राजगुरु : हमें पहले ही आंशका थी। अंग्रेज़ अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आयेंगे.... कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती।

भगत : मेरा जी चाहता है कि एक विस्फोट से अंग्रेज़ी हुकूमत के परखचे उड़ा दूँ। उनका माँस नोच-नोचकर चील कौव्वे खायें।

आज़ाद : धैर्य रखो भगत, समय आने पर विस्फोट भी होगा। पहले लाला जी के हत्यारे सांडर्स की ख़बर लेते हैं। जय गोपाल, तुम लाहौर में पुलिस-मुख्यालय पर गुपचुप निगरानी रखना। हमें इशारा करते रहना।

जय गोपाल : हाँ! यही ठीक रहेगा।

राजगुरु : सच कई दिन हो गए निशाना आजमाये। थोड़ा अभ्यास भी हो जाएगा।

भगत : हाँ-हाँ! मेरी उँगलियाँ भी पिस्तौल पर थिरकने को उमड़ रही हैं।

आज़ाद : चलो साथियो, माँ भगवती रक्षा करे।

(एक गुप्त स्थान पर लाहौर माल रोड पर सभी क्रान्तिकारी इकट्ठे होते हैं। जय गोपाल के इशारे पर सांडर्स गोलियों से भूना जाता है। क्रान्तिकारी भाग जाते हैं।)

X X X X

आज़ाद : भगत सिंह तुम विस्फोट की बात कर रहे थे।

भगत : हाँ भैया, अंग्रेज़ों के कान में सीसा भरा है, धमाके की ज़रूरत है।

दुर्गा : फिरंगियों को सबक सिखाने के लिए सभी देशवासी आतुर हैं। हमने लाला जी की मौत का बदला जिस तरह लिया है उससे अंग्रेज़ों की नींद हराम हो गई है।

आज़ाद : सड़क से अब विधान सभा की बारी है। भगत तुम और दत्त विधानसभा में बम लेकर जाओ। मैंने सारी व्यवस्था कर दी है।

राजगुरु : हैं ! विधानसभा में बम लेकर जायें। अंगेज़ बहुत शातिर है। साथी पकड़े जायेंगे।

आज़ाद : हमारा उद्देश्य किसी को मारना नहीं, केवल बहरी सरकार को अपना उद्देश्य बताना है।

बटुक : विस्फोट से अखबार चिल्लायेंगे, रेडियो चीखेंगे। आज़ादी की ज्वाला सारे देश में भड़क उठेगी।

भगत : भारत के शेर दहाड़ेंगे और अंग्रेज़ जान बचाकर भागेंगे।

सुखदेव : अहा! हम मस्तानों का टोला आज़ादी का डोला लायेंगे। आज़ादी का डोला!

दुर्गा : भगत विधान सभा में जाना मौत के मुँह में जाना है।

भगत : माँ हमने तो बचपन से बसंती चोले की पूजा की है आज वह दिन आया है। सूली के उस पार खड़ी माँ ने हमें बुलाया है।

दुर्गा : धन्य! भारत के वीरो, मैं अपने हाथों से तुम्हारा तिलक करूँगी। तुम्हें सजाऊँगी (माथा चूमती है और तिलक करती है। सभी प्रस्थान करते हैं)

इन्कलाब ज़िन्दाबाद! भारत माता की जय। साम्राज्यवाद का नाश हो। इन नारों के साथ विधान सभा दहल उठी। भगत सिंह, बटुकेश्वर पकड़े गए। अंग्रेज़ों ने अपना दमन चक्र तेज़ कर दिया। राजगुरु और सुखदेव के अतिरिक्त असंख्य युवक जेलों में बंद हो गए। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी की सज़ा सुनाई गई और बटुकेश्वर दत्त को काला पानी की सज़ा हो गई।

दृश्य : चार

स्थान : जेल का केन्द्रीय कक्ष

सभी क्रान्तिकारी : सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है....

जेलर : मौत का फरमान सुनकर भी गीत गाते हो।

भगत : मौत, किसकी मौत? भगवान शिव ने सृष्टि कल्याण के लिए विषपान कर लिया था। यह तो हमारे लिए प्याला है।

राजगुरु : हमारी शहीदी एक नक्षत्र की तरह होगी जो भारतवासियों को नई राह दिखायेगी।

जेलर : क्या तुम्हें ज़िन्दगी अच्छी नहीं लगती?

भगत : ज़िन्दगी, ज़िन्दगी किसे अच्छी नहीं लगती! तुम क्या जानो? हम भारत माँ के भाल की बिंदी होकर श्रृंगार होंगे। बचपन की चिंगारी आज शोला बन गई है। शोला जिसमें अंग्रेज़ राज भस्म हो जाएगा। माँ भारती की बेड़ियाँ छितरा जायेंगी।

जेलर : अच्छा-अच्छा! तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा है?

भगत : मेरी माँ को तुमने नहीं मिलने दिया, हाँ इस बेबे के हाथ से बनी रोटियाँ खायेंगे हम।

जेलर : बेबे! बेबे तो माँ को कहते हैं। यह औरत तो कर्मचारी है।

भगत : कर्मचारी को हम अपनी माँ की तरह मानते हैं। हम इसी के हाथ की बनी रोटियाँ खायेंगे।

राजगुरु : और आज़ादी को ब्याहने जायेंगे।

सभी गाते हैं (मेरा रंग दे बसंती चोला... मेरा रंग दे बसंती चोला....)

भगत	: सूली के उस पार खड़ी माँ हमें बुला रही है।
राजगुरु	: देखो, देखो, माँ के मस्तक की आभा कैसी चमक रही है।
सुखदेव	: चमकेगी क्यों नहीं? आज हम उसकी बरसों की मुराद पूरी करने जा रहे हैं। आज़ादी का डोला लाने जा रहे हैं।
सभी	: माँ, हम आ रहे हैं.... हम आ रहे हैं... भारत माता की जय... भारत माता की जय.... इन्कलाब ज़िन्दाबाद....................इन्कलाब ज़िन्दाबाद।

(सभी फाँसी के फंदे को चूमते हैं। परदा गिरता है)

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ	=	अमृतसर	ਪਰਚਮ	=	परचम
ਭਾਰਤੀ	=	भारतीय	ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ	=	क्रान्तिकारी
ਮਿੱਟੀ	=	मिट्टी	ਕੁਰਬਾਨੀ	=	कुर्बानी
ਸ਼ਕ	=	आशंका	ਰਾਜ	=	हुकूमत

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-

ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼	=	फिरंगी	ਸਵੈਰਾਜ	=	स्वराज्य
ਬਿਨਾਂ ਹਥਿਆਰਾਂ ਤੋਂ	=	निहत्था	ਖੁਸ਼ ਕਿਸਮਤ	=	अहोभाग्य
ਲਾਠੀ	=	बेंत	ਅਗਵਾਈ	=	नेतृत्व
ਚੁੱਪ ਚਾਪ	=	गुपचुप	ਬੰਬ-ਧਮਾਕਾ	=	विस्फोट
ਲੌਅ	=	ज्वाला	ਚਮਕ	=	आभा

3. शब्दार्थ :-

परखचे	=	टुकड़े-टुकड़े, धज्जियाँ
स्वराज्य	=	अपना राज्य, स्वतन्त्र राज्य
परचम	=	झण्डा
वहशियाना	=	क्रूर और जंगलियों की तरह का
भाल	=	मस्तक
मुराद	=	इच्छा
सौगन्ध	=	कसम

बवंडर = तूफान

विस्फोट = धमाका

आतुर = व्याकुल

फरमान = आदेश

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) भगत सिंह स्कूल से कहाँ चले गये थे?

(ख) जलियाँवाले बाग़ की मिट्टी हाथ में लेकर उन्होंने क्या सौगन्ध खायी?

(ग) भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के प्रिय नारे कौन-कौन से थे?

(घ) इस प्रदर्शन में किस महान नेता की मृत्यु हो गई?

(ङ) विधान सभा में बम फेंकने की ज़िम्मेवारी किसे सौंपी गई?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) इन क्रान्तिकारियों ने साइमन कमीशन का विरोध किस प्रकार किया?

(ख) लाला जी की मृत्यु का बदला इन क्रान्तिकारियों ने कैसे लिया?

(ग) विधान सभा में बम विस्फोट का क्या परिणाम निकला?

6. इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-

(क) 'ऐ फिरंगी, सामान बाँध ले, वरना सम्भलने का मौका भी न मिलेगा।'

(ख) 'हम दीवानों की टोली आज़ादी की दुल्हन को ब्याह लायेगी।'

(ग) 'हमने तो बचपन से ही बसंती चोले की पूजा की है।'

7. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

तमन्ना = ________, ________

योद्धा = ________, ________

आज़ादी = ________, ________

अंग्रेज़ = ________, ________

शहीदी = ________, ________

8. इन शब्दों के अन्तर वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें :-

आज़ाद = चन्द्रशेखर आज़ाद (एक नाम) ने क्रान्तिकारियों में जोश भर दिया।

आज़ाद = स्वतन्त्र = भारत 15 अगस्त् 1947 को आज़ाद हुआ।

माँ = जन्म देने वाली = ________________________________

माँ = भारत माँ = ________________________________

बांध = बांधना, समेटना = ______

बाँध = जलाशय का जल रोकने हेतु पत्थर आदि का बनाया गया टीला= ______

बदला = बदलना = ______

बदला = बदला लेना = ______

सबक - पाठ = ______

सबक - सबक सिखाना - ______

9. **इन मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग करें :-**

कान में सीसा भरा होना ______ ______

खिसियानी बिल्ली-सा मुँह लेकर जाना ______ ______

जले पर नमक छिड़कना ______ ______

नींद हराम होना ______ ______

जान बचाकर भागना ______ ______

मौत के मुँह में जाना ______ ______

कुत्ते की दुम सीधी न होना ______ ______

परखचे उड़ाना ______ ______

10. **नये शब्द बनायें :-**

क्रान्ति + कारी	= **क्रान्तिकारी**	मुख्य + आलय	= **मुख्यालय**
आन्दोलन + कारी	= ______	पुस्तक + आलय	= ______
कार्य + कारी	= ______	मेघ + आलय	= ______
___ + ___	= ______	चिकित्सा + आलय	= ______

11. **उपयुक्त विस्मयादि बोधक शब्द लिखें :-**

(क) ______! विधानसभा में बम लेकर जायें ।

(ख) ______! हम मस्तानों का टोला आज़ादी का डोला लायेंगे।

(ग) ______! तुम्हें जिंदगी अच्छी नहीं लगती।

(घ) ______! यही ठीक रहेगा।

(ङ) ______! उसने देश का नाम उज्ज्वल कर दिया।

(च) ______! देखना, एक दिन हम दीवानों की टोली आज़ादी की दुल्हन को ब्याह लायेगी।

12. रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) मौखिक अभिव्यक्ति- (i) देश प्रेम से सम्बन्धित गीत कक्षा में सुनायें।

(ii) तुम अपने देश के विकास के लिए कौन-से कार्य करना चाहोगे ?

(iii) भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तथा अन्य क्रान्तिकारियों की जीवनियाँ पढ़ें और उनके गुणों की कक्षा में चर्चा करें।

(ख) लिखित अभिव्यक्ति- (i) आपको अपना देश क्यों अच्छा लगता है ? चार-पाँच वाक्यों में लिखें।

(ii) यदि आप उस समय पैदा हुए होते जब देश अंग्रेज़ों का गुलाम था तो आप अंग्रेज़ों को भगाने के लिए क्या करते ?

प्रयोगात्मक व्याकरण

(1) विकारी शब्द

(i) लड़का पढ़ता है।
(ii) लड़के पढ़ते हैं।
(iii) लड़की पढ़ती है।
(iv) लड़कियाँ पढ़ती हैं।

'लड़का' एक संज्ञा शब्द है। संज्ञा से अभिप्राय किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम से है। यहाँ 'लड़का' शब्द से सम्पूर्ण 'लड़का' जाति का ज्ञान हो रहा है। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'लड़का' शब्द दूसरे वाक्य में 'लड़के' तीसरे वाक्य में 'लड़की' तथा चौथे वाक्य में 'लड़कियाँ' रूप में परिवर्तित होकर आया है। इसी परिवर्तित रूप को शब्द का विकारी रूप कहते हैं। अतः संज्ञा शब्द विकारी होते हैं।

(i) यह मेरी पुस्तक है।
(ii) इसकी कीमत बीस रुपये है।
(iii) इसे मैं बहुत रुचि से पढ़ता हूँ।
(iv) इसको मैं संभाल कर रखूँगा।

'यह' एक सर्वनाम शब्द है। सर्वनाम उन शब्दों को कहते हैं जो संज्ञा की जगह प्रयुक्त होते हैं। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'यह' सर्वनाम दूसरे वाक्य में 'इसकी' तीसरे वाक्य में 'इसे' तथा चौथे वाक्य में 'इसको' रूप में परिवर्तित होकर आया है। अतः सर्वनाम शब्द भी विकारी होते हैं।

(i) काला घोड़ा चर रहा है।
(ii) काले घोड़े चर रहे हैं।
(iii) काली घोड़ी चर रही है।

'काला' एक विशेषण शब्द है। संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। 'काला' शब्द घोड़े की विशेषता बता रहा है। अतः 'काला' विशेषण है। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'काला' शब्द दूसरे वाक्य में 'काले' तथा तीसरे वाक्य में 'काली' रूप में प्रयुक्त हुआ है। अतः विशेषण शब्द भी विकारी होते हैं।

(i) बालक **भागता है।**
(ii) बालक **भागते हैं।**
(iii) बालिका **भागती है।**
(iv) बालिकाएँ **भागती हैं।**

'भागना' एक क्रिया है। क्रिया से अभिप्राय किसी कार्य के करने या होने से है। उपर्युक्त 'भागना' क्रिया के रूपों में भी परिवर्तन होता है। जैसे-'भागता है', 'भागते हैं', 'भागती हैं'। अतः क्रिया भी विकारी है।

अतः स्पष्ट है कि जिन शब्दों के रूप में विकार (परिवर्तन) होता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं :-

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) विशेषण (4) क्रिया

(2) अविकारी शब्द

(i) चार्वी **और** मेधावी पढ़ रही हैं।

(ii) वह **ज़ोर** से हँसा।

(iii) बालक **धीरे-धीरे** चलता है।

(iv) बच्चो ! **अब** पढ़ोगे ? **या** खेलोगे ?

(v) रजनी बुद्धिमान है **परन्तु** ईमानदार नहीं।

(vi) **वाह** ! कितना सुन्दर बगीचा है।

उपर्युक्त वाक्यों में **और, ज़ोर, धीरे-धीरे, अब, या, परन्तु, वाह** ऐसे शब्द हैं कि वाक्य चाहे कैसा भी हो, ये शब्द ज्यों के त्यों ही रहते हैं। इनमें परिवर्तन न होने के कारण इन्हें अविकारी शब्द कहा जाता है।

अविकारी शब्द भी चार प्रकार के हैं :

(1) क्रिया विशेषण (2) समुच्चयबोधक (3) सम्बन्धबोधक (4) विस्मयादिबोधक

(1) विकारी शब्द

संज्ञा

(i) **कपिल मुनि मुक्तसर** आश्रम में रहते थे।

(ii) क्या तुम्हारे पास कोई **मकान** है ?

(iii) उनको **राहुल** पर **गुस्सा** आया।

(iv) राहुल ने **मेहनत** करने की ठान ली।

उपर्युक्त वाक्यों में '**कपिल मुनि**', '**राहुल**', व्यक्तियों के नाम हैं। '**मुक्तसर** स्थान का नाम है। '**मकान**' वस्तु का नाम है। '**गुस्सा**' भाव विशेष का तथा '**मेहनत**' गुण विशेष का नाम है। अतएव **कपिल मुनि, राहुल, मुक्तसर, मकान, गुस्सा** तथा **मेहनत** किसी न किसी के नाम को प्रकट कर रहे हैं। ऐसे पद, जो किसी के नाम का बोध कराएँ, संज्ञा कहलाते हैं।

अतएव, किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(क) (1) **लाल बहादुर शास्त्री भारत** के दूसरे प्रधानमंत्री थे।

(2) उनका जन्म **बनारस** में हुआ।

(3) वे मेला देखने **गंगा** पार गये।

ऊपर लिखे पहले वाक्य में '**लाल बहादुर शास्त्री**' किसी विशेष व्यक्ति के नाम का बोध कराता है। '**भारत**' शब्द से देश विशेष का ज्ञान होता है। दूसरे वाक्य में '**बनारस**' कहने से एक विशेष स्थान का ही विचार मन में आता है। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में '**गंगा**' शब्द से एक विशेष नदी अर्थात् गंगा नदी का बोध होता है।

अतः जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ख) (1) लाल बहादुर शास्त्री का जन्म साधारण **परिवार** में हुआ था।

(2) शास्त्री जी की **पुत्री** बीमार थी।

(3) उनका **स्कूल** गंगा पार था।

(4) शास्त्री जी अनेक बार **जेल** गये।

ऊपर के प्रथम वाक्य में '**परिवार**', दूसरे में '**पुत्री**' और तीसरे में '**स्कूल**' और चौथे में '**जेल**' ऐसे शब्द हैं जो किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान को सूचित नहीं करते।

— '**परिवार**' किसी भी परिवार के लिए कहा जा सकता है।

— हरेक '**पुत्री**' के लिए '**पुत्री**' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

— प्रत्येक '**स्कूल**' को '**स्कूल**' ही कहा जाता है।

— हरेक '**जेल**' के लिए '**जेल**' शब्द का ही प्रयोग होता है।

अर्थात् 'परिवार' कहने से सभी परिवारों, 'पुत्री' कहने से सभी पुत्रियों, 'स्कूल' कहने से सभी स्कूलों तथा जेल कहने से सभी जेलों का बोध होता है, किसी एक का नहीं।

अतः ये शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध नहीं कराते अपितु ये शब्द पूरी जाति (वर्ग) का ज्ञान कराते हैं। इसीलिए ये शब्द जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

अतः जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की सम्पूर्ण जाति या वर्ग का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ग) (1) शंकर सदा **सच** बोलता था।

(2) वह **बचपन** से **मेहनत** करता था।

(3) **ईमानदारी सुख** की खान है।

(4) शंकर **आनन्द** से रहने लगा।

ऊपर के वाक्यों में '**सच**', '**मेहनत**', '**ईमानदारी**', गुण के नाम हैं। '**बचपन**', एक अवस्था का नाम है। '**सुख**' एक दशा का नाम है तथा '**आनन्द**' एक भाव का नाम है। यहाँ 'सच', 'मेहनत', 'ईमानदारी', 'बचपन', 'सुख' तथा 'आनन्द' ये किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम नहीं हैं अपितु उनके गुण, अवस्था, दशा तथा भाव को प्रकट कर रहे हैं। यहाँ ये भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

अतः जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, अवस्था, दशा, भाव आदि के नाम को प्रकट करे, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

विशेष :- भाववाचक संज्ञा की सबसे बड़ी पहचान यह है कि उसका चित्र नहीं बन सकता। जैसे बच्चे (जातिवाचक संज्ञा) का चित्र बन सकता है, बचपन (भाववाचक संज्ञा) का नहीं। इसी प्रकार शंकर (व्यक्तिवाचक संज्ञा) का चित्र बन सकता है उसकी ईमानदारी (भाववाचक संज्ञा) का नहीं।

संज्ञा के विकारी तत्त्व

संज्ञा एक विकारी शब्द है। जैसे- लड़का से लड़की, लड़के, लड़कों, लड़कियाँ आदि अनेक रूप बनते हैं। संज्ञा में विकार लिंग, वचन व कारक के कारण होता है। अत: इन्हें संज्ञा के विकारी तत्त्व कहा जाता है। इनका क्रमश: विवेचन इस प्रकार है-

लिंग

(क)	(ख)
(1) बालक फुटबाल खेलता है।	(1) बालिका फुटबाल खेलती है।
(2) लेखक कहानी लिखता है।	(2) लेखिका कहानी लिखती है।
(3) लड़का पुस्तक पढ़ रहा है।	(3) लड़की पुस्तक पढ़ रही है।
(4) माली पौधों को पानी देता है।	(4) मालिन पौधों को पानी देती है।

उपर्युक्त **'क'** वर्ग के वाक्यों में **'बालक'**,**'लेखक'**,**'लड़का'** तथा **'माली'** शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं तथा **'ख'** वर्ग के वाक्यों में **'बालिका'**, **'लेखिका'**, **'लड़की'** तथा **'मालिन'** शब्द स्त्रीलिंग जाति का बोध कराते हैं अत: **'क'** वर्ग के शब्द पुल्लिंग तथा **'ख'** वर्ग के शब्द स्त्रीलिंग हैं। अत: शब्द के जिस रूप द्वारा यह जाना जाए कि जिसके विषय में बात की जा रही है, वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहा जाता है। हिन्दी में दो लिंग हैं-

(1) पुल्लिग (2) स्त्रीलिंग

(1) **पुल्लिग-पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द 'पुल्लिंग' कहलाते हैं। जैसे-**

(i) धोबी कपड़े धोता है।

(ii) कुत्ता भौंक रहा है।

(iii) कवि कविता सुनाता है।

(iv) घोड़ा घास खा रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में **'धोबी'**,**'कुत्ता'**, **'कवि'** तथा **'घोड़ा'** शब्द पुल्लिग हैं क्योंकि ये सभी शब्द पुरुष जाति का बोध करा रहे हैं।

(2) **स्त्रीलिंग-स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द 'स्त्रीलिंग' कहलाते हैं। जैसे-**

(i) चिड़िया चहचहाती है।

(ii) नानी कहानी सुनाती है।

(iii) लड़की नाच रही है।

(iv) गाय घास खा रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में **'चिड़िया'**, **'नानी'**, **'लड़की'** तथा **'गाय'** शब्द स्त्रीलिंग शब्द हैं; क्योंकि ये सभी शब्द स्त्री जाति का बोध करा रहे हैं।

वचन

(क)	(ख)
(i) लड़का खेलता है।	(i) लड़के खेलते हैं।
(ii) लड़की खेलती है।	(ii) लड़कियाँ खेलती हैं।
(iii) बच्चा सो रहा है।	(iii) बच्चे सो रहे हैं।
(iv) कुत्ता भौंक रहा है।	(iv) कुत्ते भौंक रहे हैं।
(v) चिड़िया उड़ रही है।	(v) चिड़ियाँ उड़ रही हैं।

उपर्युक्त 'क' वर्ग के वाक्यों में 'लड़का', 'लड़की', 'बच्चा', 'कुत्ता' तथा 'चिड़िया' शब्दों से एक की संख्या का बोध होता है तथा 'ख' वर्ग के वाक्यों में 'लड़के' 'लड़कियाँ', 'बच्चे', कुत्ते' तथा 'चिड़ियाँ' शब्दों से एक से अधिक संख्या का बोध होता है। अत: ऐसे शब्द जिन से संज्ञाओं की संख्या का पता चलता है, वे 'वचन' कहलाते हैं।

वचन के भेद

वचन के दो भेद हैं (1) एकवचन (2) बहुवचन

(1) एकवचन–शब्द के जिस रूप से एक का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे-

(i) गाय चर रही है।

(ii) कबूतर उड़ रहा है।

(iii) गाड़ी चल रही है।

(iv) लड़की पढ़ रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में **'गाय'**, **'कबूतर'**,**'गाड़ी'** तथा **'लड़की'** शब्द एकवचन हैं; क्योंकि इनसे एक ही 'गाय', 'कबूतर','गाड़ी' और 'लड़की' का बोध हो रहा है।

(2) बहुवचन–शब्द के जिस रूप से अधिक का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे-

(i) स्त्रियाँ पानी भर रही हैं।

(ii) पुस्तकें अलमारी में पड़ी हैं।

(iii) लड़के नाच रहे हैं।

(iv) घोड़े दौड़ रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में **'स्त्रियाँ'**,**'पुस्तकें'**, **'लड़के'**, तथा **'घोड़े'** शब्द बहुवचन हैं; क्योंकि इनसे एक से अधिक स्त्रियों , पुस्तकों, लड़कों तथा घोड़ों का बोध हो रहा है।

कारक

(क) सिपाही ने दरबार में चाबुक से किसान को मारा।

इस वाक्य में **'मारा'** क्रिया है।

किसने मारा ? सिपाही ने

कहाँ मारा ? दरबार में

किससे मारा ? चाबुक से

किसको मारा ? किसान को

अतः स्पष्ट है कि वाक्य में '**सिपाही ने**', '**दरबार में**', **चाबुक से** तथा '**किसान को**' शब्द-रूपों का सम्बन्ध '**मारा**' क्रिया से सूचित हो रहा है।

(ख) (i) यह लेखक का नौकर है।

(ii) यह मेरा नौकर है।

यहाँ पहले वाक्य में '**लेखक**' **(संज्ञा) का सम्बन्ध नौकर (संज्ञा) से है** तथा दूसरे वाक्य में **'मेरा (सर्वनाम) का सम्बन्ध नौकर (संज्ञा) से है।**

अतः संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के जिस रूप से उनका सम्बन्ध क्रिया तथा दूसरे शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

कारकीय सम्बन्ध को प्रकट करने वाले चिह्नों (ने, में, से, को, का आदि) को **कारक चिह्न** कहा जाता है।

1. (i) **ठग ने** झगड़ा किया। (ii) **राजा** सुन रहा था।

पहले वाक्य में झगड़ने की क्रिया करने वाला ठग है, अतः ठग **कर्त्ता** है।

दूसरे वाक्य में सुनने की क्रिया राजा द्वारा हो रही है, अतः राजा **कर्त्ता** है।

यहाँ पहले वाक्य में '**ठग ने**' और दूसरे वाक्य में '**राजा**' **कर्त्ता कारक** हैं।

विशेष :- दूसरे वाक्य में कर्त्ता (राजा) कारक चिह्न रहित है।

अतः संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का पता चलता है,उसे कर्त्ता कारक कहते हैं।

2. लोगों ने **घोड़े को** रोक लिया।

इस वाक्य में क्रिया 'रोकना' तथा कर्त्ता 'लोग' हैं। **क्रिया का फल घोड़े पर** पड़ रहा है। अतः **घोड़े को** में कर्म कारक है

अतः संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

3. राजा ने **कलम से** लिखा।

यहाँ कर्त्ता ने (राजा) लिखने की क्रिया 'कलम से' की है, अतः '**कलम से**' में **करण कारक** है।

अतः संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं।

4. (i) उसने **राजा को** दवात दी।

(ii) नौकर **राजा के लिए** दवात लाया।

इन वाक्यों में '**राजा को**' तथा '**राजा के लिए**' सम्प्रदान कारक हैं क्योंकि 'देने' और 'लाने' क्रियाओं का कार्य इनके लिए हुआ है।

अत: जिसे कुछ दिया जाये या जिसके लिए कुछ किया जाये, ऐसा बोध कराने वाले संज्ञा या सर्वनाम के रूपों को सम्प्रदान कारक कहते हैं।

5. **झरनों से** पानी गिर रहा था।

इस वाक्य में '**झरनों से**' पानी के अलग होने का बोध हो रहा है इसलिए यहाँ अपादान कारक है। **अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होना पाया जाये, वह अपादान कारक कहलाता है।**

6. (i) **रेणुका** का मेला रेणुका **झील के किनारे** आयोजित होता है।

(ii) रेणुका **परशुराम की** माता का नाम है।

यहाँ पहले वाक्य में '**रेणुका का**' मेले से, '**झील का**' किनारे से तथा दूसरे वाक्य में '**परशुराम का**' माता से सम्बन्ध प्रकट हो रहा है। अत: यहाँ सम्बन्ध कारक है।

अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकट हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं।

विशेष :- क्रिया के साथ सम्बन्ध न कराने के कारण कुछ विद्वान सम्बन्ध कारक को कारक नहीं मानते हैं।

7. (i) हमने **कमरों में** सामान रख दिया।

(ii) बन्दर **वृक्षों पर** कूदते नज़र आ रहे थे।

इन वाक्यों में '**कमरों में**', '**वृक्षों पर**' पद उन स्थानों को सूचित कर रहे हैं, जहाँ क्रिया के आधार का बोध होता है। अत: यहाँ अधिकरण कारक है।

अतएव संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

8. **हे ईश्वर!** मेरी रक्षा करो।

अरे बच्चो! तुम क्या कर रहे हो?

यहाँ '**हे ईश्वर**' में ईश्वर को पुकारा जा रहा है तथा '**अरे बच्चो**' में बच्चों को सम्बोधित किया जा रहा है, अत: यहाँ सम्बोधन कारक है।

अत: शब्द के जिस रूप से किसी को पुकारने अथवा सम्बोधन करने का ज्ञान हो, वहाँ सम्बोधन कारक होता है।

सम्बोधन कारक का प्रयोग कारक चिह्न के बिना भी होता है। जैसे-भाई ! ज़रा इधर आओ।

विशेष :- सम्बोधन कारक का सम्बन्ध वाक्य में क्रिया अथवा किसी दूसरे शब्द से नहीं होता, अतएव कुछ विद्वान इसे कारक नहीं मानते।

गोपू एक ग्वाला था। **उसकी** कुटिया के पिछवाड़े गोबर के उपले पड़े हुए थे। **उसने** बड़ी मेहनत से **उन्हें** बनाया था। एक दिन **वह** घर पर नहीं था। **उसके** उपले गाँव के शरारती बच्चों ने उठा लिये।

ऊपर के गद्यांश में 'गोपू' एक व्यक्ति तथा 'उपले' एक वस्तु के नाम हैं। अतः 'गोपू' और उपले संज्ञा शब्द हैं। उपरोक्त पंक्तियों में रेखांकित किए गए शब्द '**उसकी**', '**उसने**', '**वह**' तथा '**उसके**' गोपू के लिए तथा '**उन्हें**' उपलों के लिए प्रयोग में आये हैं।

अतः ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में आते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

(1) (i) गोपू मुखिया से बोला, "**मैं** शहर गया हुआ था। **मेरे** उपले किसी ने चुरा लिये।

यहाँ बोलने वाले (गोपू) ने अपने लिए 'मैं' और 'मेरे' सर्वनामों का प्रयोग किया है।

(ii) मुखिया गोपू से बोला, "**तुम** चिंता न करो- **तुम्हें** न्याय मिलेगा।"

यहाँ सुनने वाले (गोपू) के लिए '**तुम**' और '**तुम्हें**' सर्वनामों का प्रयोग हुआ है।

(iii) मुखिया मन ही मन बोला, "गाँव के बच्चे शरारती हैं। यह शरारत **उनकी** ही है।

यहाँ बोलने वाले (मुखिया) ने अन्य (अनुपस्थित) व्यक्तियों (बच्चों) के लिए '**उनकी**' सर्वनाम का प्रयोग किया है।

अतएव बोलने वाला अपने लिए, सुनने वाले तथा अन्य (अनुपस्थित) व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। यह सर्वनाम का पहला भेद है।

(2) (i) देखो, बच्चे खड़े हैं, **इन्होंने** प्रायश्चित कर लिया है

(ii) **वह** मेरी कुटिया है।

ऊपर पहले वाक्य में '**इन्होंने**' सर्वनाम का प्रयोग पास खड़े बच्चों के लिए तथा दूसरे वाक्य में '**वह**' सर्वनाम का प्रयोग दूर स्थित 'कुटिया' के लिए किया गया है। अर्थात् '**इन्होंने**' तथा '**वह**' से निश्चयपूर्वक बोध हो रहा है **अतः जिन सर्वनामों से निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का दूसरा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **यह, ये, वे, इसको आदि।**

(3) (i) **किसी** ने मेरे उपले उठा लिये।

(ii) **कुछ** न **कुछ** तो करना ही पड़ेगा।

उपरोक्त वाक्यों में '**किसी**' तथा '**कुछ**' किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं कराते अतः अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं। **अतः जिन सर्वनामों से निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का तीसरा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **कोई, किस, किन्हीं आदि**

(4) **जो** भी उपले तैयार किए बिना होली खेलता नज़र आएगा, **उसके** अभिभावक को प्रति बच्चे पर सौ-सौ रुपये जुर्माना देना पड़ेगा।

उपरोक्त वाक्य में '**जो**' तथा '**उसके**' रेखांकित शब्द दो वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध जोड़ते हैं, अत: ये सम्बन्ध वाचक सर्वनाम हैं। **अतएव जिन सर्वनामों से एक बात का दूसरी बात से सम्बन्ध प्रकट हो उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का चौथा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **जो-सो, जिसने-उसने, जिसकी-उसकी आदि।**

(5) (i) वह **अपने** पाले में वापिस आ गया।

(ii) वे **स्वयं** खिलाड़ियों को रणनीति समझाने लगे।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अपने' तथा 'स्वयं' शब्द क्रमश: कर्त्ता (कार्य करने वाला) '**वह**' और 'वे' के साथ निजत्व (अपनेपन) का बोध करा रहे हैं, अत: 'निजवाचक' सर्वनाम हैं।

अतएव जो सर्वनाम वाक्य में कर्त्ता के साथ निजत्व (अपनेपन) का बोध करायें उन्हें 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं। यह सर्वनाम का पाँचवाँ भेद है।

अन्य उदाहरण : **स्वयं, खुद, अपने आप, आप**

(6) इस मैच में **कौन**-सी टीम जीतेगी ?

उपर्युक्त वाक्य में '**कौन**' शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए हुआ है, अत: ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

अतएव जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग में आते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का छठा भेद है।

अन्य उदाहरण : **क्या, किसने, किसे।**

विशेषण

(i) राजस्थान में **एक** ज़िला है डूंगरपुर।

(ii) कालीबाई अगर **साधारण** ज़िंदगी जीतीं तो उनका नाम शायद कोई नहीं जानता।

(iii) यह **प्रेरक** कहानी है।

(iv) वह **निडर** थी।

उपर्युक्त वाक्यों में '**एक**' शब्द ज़िले (संज्ञा) की, '**साधारण**' शब्द ज़िंदगी (संज्ञा) की, '**प्रेरक**' शब्द कहानी (संज्ञा) की तथा '**निडर**' शब्द वह (सर्वनाम) की विशेषता बता रहे हैं इसलिए ये विशेषण शब्द हैं।

अत: जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

(1) (i) कालीबाई **बहादुर** बालिका थी।

(ii) **कच्ची** उम्र की लड़की ने अपना बलिदान दे दिया।

(iii) राजस्थान में रास्तापाल **छोटा** गाँव है।

उपर्युक्त वाक्यों में '**बहादुर**' '**कच्ची**' तथा '**छोटा**' शब्द क्रमशः बालिका, उम्र तथा गाँव संज्ञा शब्दों की गुण सम्बन्धी विशेषता का बोध करा रहे हैं। अतः ये गुणवाचक विशेषण हैं।

अतः जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की गुण सम्बन्धी विशेषता का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(2) (i) स्कूल के **दो** अध्यापक क्राँतिकारी गतिविधियाँ चलाते थे।

(ii) **तेरह** साल की लड़की आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ी।

(iii) **कुछ** लोग तथा **कुछ** सिपाही वहाँ पहुँचे।

उपर्युक्त वाक्यों में '**दो**' शब्द से अध्यापक की तथा '**तेरह**' शब्द से 'साल' की निश्चित संख्या का बोध हो रहा है अतः **निश्चित संख्यावाचक विशेषण** हैं और '**कुछ**' शब्द से लोग तथा सिपाही की अनिश्चित संख्या का बोध हो रहा है अतः '**कुछ**' शब्द **अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण** हैं।

अतः जिन शब्दों से संज्ञा/सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध हो वे निश्चित संख्यावाचक तथा जिनसे निश्चित संख्या का बोध न हो, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

(3) (i) एक श्रद्धालु ने गुप्त रूप से **सौ किलो** दूध व **पचास किलो** चीनी लंगर हेतु भिजवायी।

(ii) हमने मिलकर **बहुत सारी सूजी**, चाय पत्ती और **ढेर सारे घी** का प्रबन्ध कर रखा था।

उपर्युक्त पहले वाक्य में '**सौ किलो**' से दूध (संज्ञा) के तथा '**पचास किलो**' से चीनी (संज्ञा) के निश्चित नाप-तोल का पता चल रहा है। अतः ये निश्चित परिमाण (नाप-तोल) वाचक विशेषण हैं। दूसरे वाक्य में '**बहुत सारी**' से तथा '**ढेर सारे**' से निश्चित परिमाण का बोध नहीं हो रहा अतः ये अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

अतएव जिस विशेषण से निश्चित परिमाण का बोध हो उसे निश्चित परिमाण वाचक तथा जिससे निश्चित परिमाण का बोध न हो, उसे अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं।

(4) (i) **हमारा** शहर रोशनी से जगमगा रहा था।

(ii) **ऐसा** नज़ारा देखकर मैं भाव विभोर हो उठा।

उपर्युक्त वाक्य में '**हमारा**' तथा '**ऐसा**' सर्वनाम क्रमशः शहर तथा नज़ारा संज्ञा शब्दों से पूर्व आकर इनकी विशेषता बता रहे हैं। अतः हमारा तथा ऐसा शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं।

अतएव जब सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों से पहले लगकर विशेषण का काम करते हैं तो उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

क्रिया

(i) राजा घोड़े पर बैठकर उसी शहर को **चला**।

(ii) राजा ने नौकर अपने पास **रख लिया**।

(iii) दोनों को राज दरबार में **ले जाया गया**।

(iv) राजा **सुन रहा था**।

उपरोक्त वाक्यों में '**चला**', '**रख लिया**', '**ले जाया गया**' तथा '**सुन रहा था**' से किसी काम का करना या होना प्रकट होता है। ये शब्द **क्रिया हैं**।

अतः जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

अन्य उदाहरण :- पढ़ना, खेलना, सोना, हँसना, लिखना, दौड़ना, पीना, सीना, उठना, बैठना, करना, पकड़ना, छोड़ना, तोड़ना, नाचना, मारना आदि।

क्रिया में परिवर्तन

संज्ञा शब्दों की तरह क्रिया शब्द भी विकारी है। क्रिया शब्दों में परिवर्तन लिंग, वचन, पुरुष, काल और वाच्य के कारण होता है।

लिंग

मोहन गा रहा था (पुल्लिंग)

राधा खेल रही थी। (स्त्रीलिंग)

यहाँ 'रहा था' क्रिया **पुल्लिंग** है और 'रही थी' क्रिया **स्त्रीलिंग** है।

इस प्रकार संज्ञा शब्दों की भाँति क्रिया शब्दों के दो लिंग होते हैं :-

(1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग

वचन

लड़का हँसता है।

लड़के पढ़ते हैं।

यहाँ '**हँसता है**' **एकवचन** है और 'पढ़ते हैं' **बहुवचन** हैं।

इस प्रकार क्रिया शब्दों के दो वचन होते हैं :- (1) एक वचन (2) बहुवचन

पुरुष

मैं पढ़ता हूँ।

हम लिखते हैं।

यहाँ '**मैं**' और '**हम**' कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अतः **उत्तम पुरुष** हैं।

तू जाता है।

तुम खाते हो।

यहाँ '**तू**' और '**तुम**' कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अत: **मध्यम पुरुष** हैं।

वह देखता है।

कोई जा रहा है।

यहाँ '**वह**' और '**कोई**' कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अत: **अन्य पुरुष** हैं।

इस प्रकार कर्त्ता के अनुसार क्रिया के तीन पुरुष हैं :

(1) उत्तम पुरुष (मैं, हम)

(2) मध्यम पुरुष (तू, तुम)

(3) अन्य पुरुष (वह, वे, संज्ञा शब्द)

काल

(i) घोड़ा हिनहिनाया।

(ii) घोड़ा हिनहिना रहा है।

(iii) घोड़ा हिनहिनायेगा।

उपर्युक्त वाक्यों में ध्यान से क्रिया को पहचानिये। ध्यान दीजिये कि पहले वाक्य में क्रिया हो गयी है (हिनहिनाया) दूसरे वाक्य में क्रिया हो रही है- (हिनहिना रहा है) तथा तीसरे वाक्य में क्रिया आने वाले समय में अभी होगी (हिनहिनायेगा)। दरअसल क्रिया से यह भी पता चलता है कि काम कब हुआ अर्थात् क्रिया होने का समय। इसे ही क्रिया का काल कहते हैं।

अतएव क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का ज्ञान हो उसे 'काल' कहते हैं।

(1) (i) बाबा ने घोड़े को रोका।

(ii) खड्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था।

(iii) बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे।

इन वाक्यों में 'रोका', 'था' तथा 'जा रहे थे' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया का करना या होना बीते हुए समय में हुआ है। **अत: बीते समय को भूतकाल कहते हैं।**

(2) (i) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता है।

(ii) अपाहिज घोड़े को दौड़ाए जा रहा है।

(iii) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता होगा।

इन वाक्यों में 'दौड़ाए जा रहा है', 'दौड़ाता है', तथा 'दौड़ाता होगा' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया चल रहे समय अर्थात् वर्तमान काल में हो रही है **अतः चल रहे समय को वर्तमान काल कहते हैं।**

(3) (i) बाबा जी, यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

(ii) उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'रहने दूँगा' तथा 'मोह लेगी' क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं से भविष्य में कार्य के होने का पता चलता है अर्थात् अभी कार्य हुआ नहीं है **अतः जब क्रिया का करना या होना आने वाले समय में पाया जाता है, उसे भविष्यत काल कहते हैं।**

याद रखें :-

काम का करना या होना- यह बतलाये क्रिया हमें

भूत, वर्तमान है भविष्य-यह बतलाये काल हमें

वाच्य

1. धीरा जूते पॉलिश करता था।
2. धीरा द्वारा जूते पॉलिश किये जाते थे।
3. धीरा से रहा नहीं गया।

उपर्युक्त पहले वाक्य में क्रिया कर्त्ता (धीरा) के अनुसार है, दूसरे वाक्य में क्रिया कर्म (जूते) के अनुसार है तथा तीसरे वाक्य में कर्म नहीं है अर्थात यहाँ भावों (रहा नहीं गया) की ही प्रधानता है।

अतएव क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाये कि क्रिया कर्त्ता के अनुसार है या कर्म के अनुसार है या भाव के अनुसार है, उस रूप को वाच्य कहते हैं।

इस तरह वाच्य तीन प्रकार के होते हैं :-

1. कर्त्तृवाच्य **2. कर्म वाच्य** **3. भाव वाच्य**

(i) धीरा धुन गुनगुना रहा था।

(ii) धीरा द्वारा धुन गुनगुनायी जा रही थी।

पहले वाक्य में कर्त्ता (धीरा) प्रधान है और क्रिया का लिंग, (गुनगुना रहा था) एवं वचन उसी कर्त्ता के अनुसार है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में कर्त्ता प्रधान हो, उसे कर्त्तृ वाच्य कहते हैं।

दूसरे वाक्य में क्रिया (गुनगुनायी जा रही थी) का लिंग एवं वचन कर्त्ता (धीरा) के अनुसार न होकर कर्म (धुन) के अनुसार है, यहाँ क्रिया कर्म वाच्य है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, उसे कर्म वाच्य कहते हैं।

(iii) धीरा से रहा नहीं गया।

तीसरे वाक्य में 'रहा नहीं गया' क्रिया का भाव ही मुख्य है। क्रिया अकर्मक है जो अन्य पुरुष, पुल्लिग, एकवचन में है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में क्रिया के भाव की प्रधानता के कारण अकर्मक क्रिया का प्रयोग हो, और जो सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिग तथा एक वचन में हो, उसे भाव वाच्य कहते हैं।

(2) अविकारी शब्द

क्रिया विशेषण

(i) कलिंग के फाटक आज बंद हैं।

(ii) महाराज! आप यहाँ बैठिए।

(iii) सैनिक ने अपनी तलवार झटपट संभाल ली।

(iv) अधिक मत बोलो।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'आज' शब्द क्रिया के काल, दूसरे वाक्य में 'यहाँ' शब्द क्रिया के स्थान, तीसरे वाक्य में 'झटपट' शब्द क्रिया की रीति तथा चौथे वाक्य में 'अधिक' शब्द क्रिया की मात्रा सम्बन्धी विशेषता बता रहे हैं अत: ये क्रिया विशेषण हैं।

अतएव क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।

(1) –मैं युद्ध **कल** करूँगा।

इस वाक्य में 'कल' शब्द से क्रिया के काल (समय) का पता लग रहा है। अत: यह कालवाचक क्रियाविशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया के काल (समय) की विशेषता बताये उसे कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

अन्य कालवाचक शब्द :- रोज, प्रात:, परसों, अभी, सुबह, शाम, रात, कभी, अब, तब, आजकल आदि।

(2) सब आश्चर्य से **उधर** देखने लगते हैं।

इस वाक्य में 'उधर' शब्द से क्रिया के स्थान का पता चल रहा है। अत: यह स्थानवाचक क्रियाविशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की स्थान सम्बन्धी विशेषता बताये उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य स्थानवाचक क्रियाविशेषण: यहाँ, वहाँ, इधर, ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर, दूर, आगे, पीछे, चारों तरफ आदि।

(3) वह **बहुत** बोलता है।

इस वाक्य में 'बहुत' शब्द से क्रिया की मात्रा या परिमाण का पता चल रहा है। अतः यह परिमाणवाचक क्रिया विशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की परिमाण सम्बन्धी विशेषता बताये, उसे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य परिमाणवाचक शब्दः थोड़ा, ज्यादा, कम, पर्याप्त, तनिक, इतना, उतना, न्यून, लगभग, काफी आदि।

(4) संवाददाता महाराज से **धीरे-से** बोला।

इस वाक्य में 'धीरे-से' शब्द से क्रिया की रीति (ढंग) का पता चल रहा है अतः यह रीतिवाचक क्रिया विशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की रीति सम्बन्धी विशेषता बताये, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य रीतिवाचक क्रियाविशेषणः ऐसे, कैसे, जैसे, तैसे, वैसे, जल्दी-जल्दी, अकस्मात, अचानक, सहसा, सामान्यतः, साधारणतः आदि।

समुच्चयबोधक (योजक)

(i) गिल्लू परदे पर चढ़ा **और** नीचे उतर गया।

(ii) गिल्लू अन्य खाने की चीज़ें लेना बन्द कर देता था **या** झूले से नीचे फेंक देता था।

(iiii) उनका मुझसे लगाव कम नहीं है **परन्तु** उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत नहीं हुई।

(iv) भूख लगने पर गिल्लू का चिक चिक करना ऐसा लगा **मानो** मुझे अपने भूखे होने की सूचना देता हो।

(v) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी **क्योंकि** उसे वह लता सबसे प्रिय थी।

(vi) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती **अतः** गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया।

(vii) गिल्लू को कौवे की चोंच से घाव हो गया था। **इसलिए** वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका पड़ा था।

उपर्युक्त वाक्यों में 'और', 'या', 'परन्तु', 'मानो', 'क्योंकि', 'अतः', तथा 'इसलिए' शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ रहे हैं। इन शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं।

अतएव दो शब्दों, वाक्य के अंशों और वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक कहते हैं।

अन्य योजक शब्द :- एवं, तथा, किंतु, चाहे, पर, इस कारण, यानि, कि यद्यपि----तथापि, चाहे---- फिर भी आदि।

(i) सामिषा अपने माता-पिता **के साथ** धर्मशाली गयी।

(ii) डल झील के **चारों ओर** देवदार के पेड़ हैं।

(iii) घरों **के सामने** बाँस के अनगिनत वृक्ष हैं।

(iv) हम बाग़ानों, मकानों और बंगलों **के बीच** से गुजरती सड़क से न्यूगल कैफेटेरिया पहुँचे।

(v) कैफेटेरिया **के पीछे** न्यूगल खड्ड है।

(vi) हम खराब सड़क **के कारण** ट्रैकिंग स्थल त्रिपुंड नहीं जा सके।

(vii) मेरे **सामने** प्रकृति के अद्भुत दृश्य थे।

उपर्युक्त वाक्यों में के साथ, के चारों ओर, के सामने, के बीच, के पीछे, के कारण तथा सामने शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बता रहे हैं। अतः ये सम्बन्ध बोधक हैं।

अतएव जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें सम्बन्ध बोधक कहते हैं।

यदि इन सम्बन्ध बोधक अविकारी शब्दों को वाक्य में से निकाल दिया जाये तो वाक्य का अर्थ ही नहीं रहता।

अन्य सम्बन्ध बोधक शब्द :- पहले, बाद, आगे, पीछे, बाहर, भीतर, ऊपर, नीचे, पास, अनुसार, तरह, समान, बिना, कारण, तक, भर, संग, साथ, के मारे, बगैर, रहित, सिवाय आदि।

सम्बन्ध बोधक का प्रयोग दो प्रकार से होता है :-

1. **विभक्तियों के साथ**
2. **विभक्तियों के बिना**

(1) विभक्तियों के साथ सम्बन्ध बोधक शब्द प्रमुख रूप से निम्नलिखित तरह से प्रयुक्त होते हैं:-

(i) हमने चिन्मय तपोवन **की ओर** प्रस्थान किया।

(ii) वीर सैनिकों ने देश की रक्षा **के लिए** प्राण न्योछावर कर दिये।

(iii) पालम की घाटी सुन्दरी **की तरह** प्रतीत होती है।

(2) विभक्तियों के बिना सम्बन्ध बोधक शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं:-

(i) मैं जीवन **भर** इस यात्रा को याद रखूँगी

(ii) ज्ञान **बिना** जीवन बेकार है।

(iii) मुझे कई दिनों **तक** घर की याद नहीं आयी।

(iv) सड़क **पर** काली सफेद लकीर लगायी गयी है।

विस्मयादिबोधक

(i) **अरे!** मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ?

(ii) **शाबाश!** मुझे आपसे यही आशा थी।

(iii) **ना-ना!** मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा।

(iv) **आह!** मेरी प्रजा पर अत्याचार हो रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अरे', 'शाबाश', 'ना-ना' तथा 'आह' शब्द क्रमशः विस्मय, हर्ष, घृणा तथा शोक मनोभावों को व्यक्त कर रहे हैं। ये विस्मयादिबोधक शब्द हैं। इनका प्रयोग प्रायः वाक्य के शुरू में होता है तथा इन शब्दों के बाद जो चिह्न (!) लगता है, उसे विस्मयादि बोधक चिह्न कहते हैं।

अतएव जिन शब्दों मे विस्मय, हर्ष, घृणा तथा शोक आदि मन के भाव प्रकट हों वे शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

कुछ मुख्य विस्मयादिबोधक शब्द इस प्रकार हैं:-

1. **हर्ष बोधक** = अहा! वाह-वाह! धन्य आदि।
2. **घृणा बोधक** = धिक्! धत्! थू-थू ! आदि।
3. **शोकबोधक** = उफ! बाप रे! राम-राम! सी! त्राहि-त्राहि आदि।
4. **विस्मयादिबोधक** = क्या! ओहो! हैं! अरे।
5. **स्वीकारबोधक** = हाँ-हाँ! अच्छा ! ठीक! जी हाँ!
6. **चेतावनी बोधक** = सावधान! होशियार! खबरदार !
7. **भयबोधक** = हाय ! हाय राम ! उइ माँ! बाप रे!
8. **आशीर्वादबोधक** = दीर्घायु हो! जीते रहो ! खुश रहो!